INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

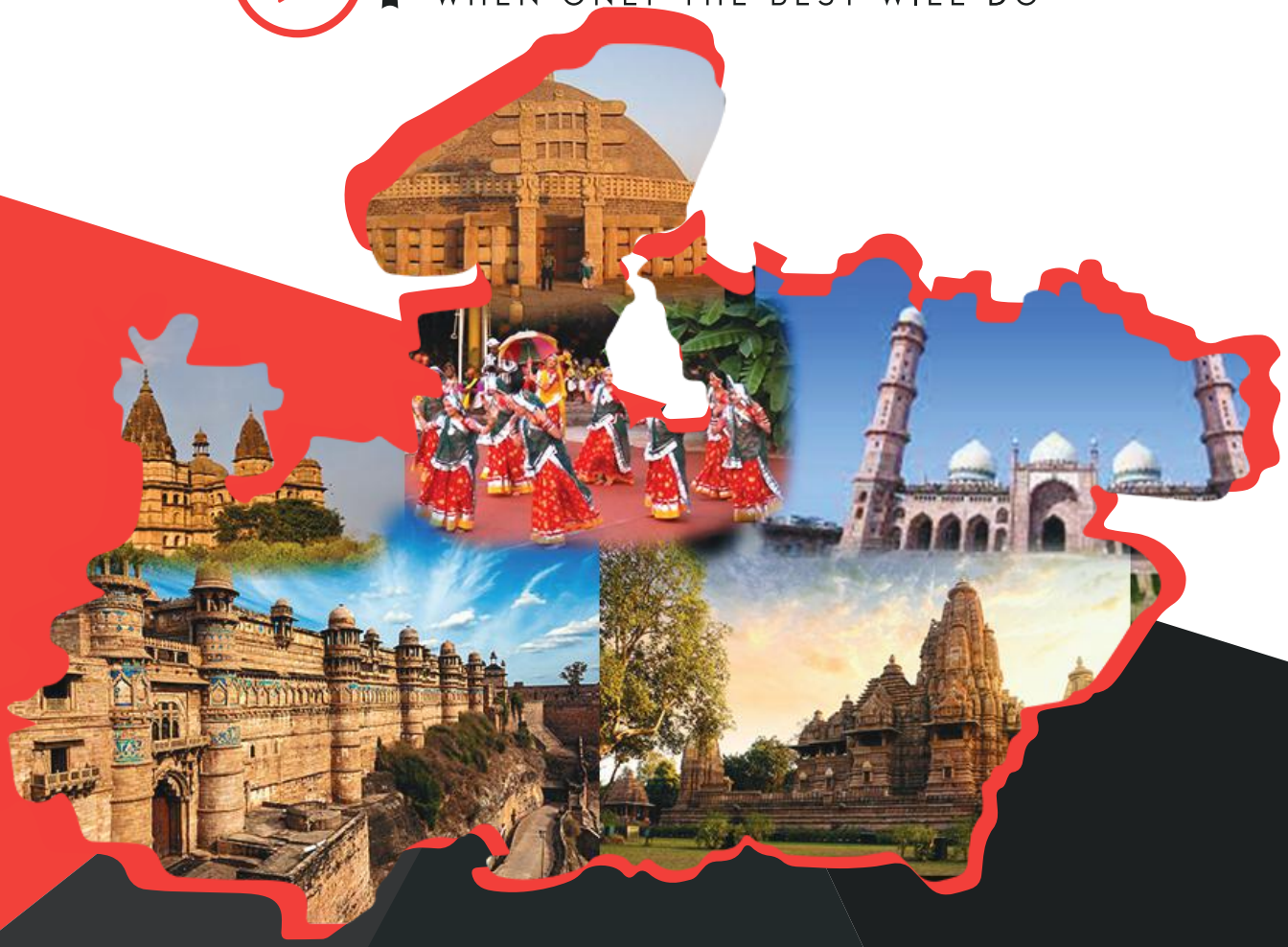

MPPSC-PCS

MADHYA PRADESH PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

भाग -1 भारत और मध्यप्रदेश का इतिहास

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

भारत और मध्यप्रदेश का इतिहास

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम (2023)**

इतिहास		
प्राचीन भारत का इतिहास		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	सिन्धु घाटी सभ्यता • ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियां	1-8
2.	वैदिक काल • उत्तरवैदिक काल	9-13
3.	छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा • महाजनपद काल	14-17
4.	धार्मिक आन्दोलन और धर्म दर्शन • आजीवक सम्प्रदाय • बौद्ध धर्म • बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव • जैन धर्म • शैव धर्म • वैष्णव धर्म (शंकराचार्य, रामानंद) • भक्ति मार्ग का प्रचार • धर्म दर्शन • वेदान्त	17-38
5.	प्रमुख प्राचीन राजवंश • (मौर्य वंश, कुषाण वंश, सातवाहन वंश, गुप्त वंश, चालुक्य वंश, पल्लव वंश, चोल वंश)	38-70

6.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाऐं	71-105
7.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास • प्राचीन भारतीय साहित्य • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें • गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ	106-124
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण	125-128
2.	दिल्ली सल्तनत • गुलाम वंश के शासक • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैयद वंश • लोदी वंश • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	128-145
3.	मुग़ल वंश	146-151
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु • मुग़ल कालीन कला एवं वास्तु • दक्षिण भारतीय मध्य-कालीन स्थापत्य कला • मध्यकालीन हिन्दू मंदिर • राजस्थानी स्थापत्य कला	152-161

	• स्थापत्य कला में प्रांतीय शैलियों का योगदानचित्रकला एवं संगीत का विकास	
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन • भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत • सूफी मत के विभिन्न सम्प्रदाय • सूफी सम्प्रदाय के प्रमुख संत	162-168
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना • अंग्रेज, फ्रांसीसी संघर्ष • मुग़ल साम्राज्य का पतन	169-178
2.	मराठा साम्राज्य • आंग्ल-मराठा युद्ध	179-186
3.	गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय	186-194
4.	1857 की क्रांति के पूर्व के विद्रोह • धार्मिक-राजनैतिक आन्दोलन • ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन • भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह	195-200
5.	1857 ई. की क्रांति	201-211
6.	भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • भारत में पत्रकारिता का विकास	212-214
7.	भारत में सामाजिक -धार्मिक सुधार आंदोलन	215-225

7.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण • कांग्रेस की स्थापना • नरमपंथी / उदारवादी चरण / उग्रवादी आंदोलन • स्वदेशी आंदोलन • गाँधी वाद	225-254
8.	स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता	255-286
9.	आजादी के बाद का इतिहास और राष्ट्र निर्माण • आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA) • देशी रियासतों का एकीकरण • पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय	287-307
मध्यप्रदेश का इतिहास		
1.	मध्य प्रदेश के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रमुख राजवंश	307-309
2.	प्राचीन काल के प्रमुख राजवंश एवं उनका योगदान	309-313
3.	मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति	313-314
4.	स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान	314-321
5.	मध्यप्रदेश की जनजातियां एवं बोलियां	321-327
6.	मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थल	328-333
7.	मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजाति व्यक्तित्व	334-337

8.	मध्य प्रदेश के प्रमुख त्यौंहार लोक संगीत लोक कलाएं एवं लोक साहित्य	338-339
9.	मध्य प्रदेश के प्रमुख मेले	340-347
10.	मध्य प्रदेश की प्रमुख लोक कलाएं	347-349
11.	मध्य प्रदेश के लोक नाट्य	350-356
	मध्यप्रदेश : विविध	357-412

अध्याय – 2
वैदिक काल

वैदिक काल को **दो भागों में बांटा** गया है -
(I) ऋग्वैदिक काल (1500-1000ई.पू
(2)उत्तरवैदिक काल (1000-600ई.पू.)

वैदिक साहित्य : एक दृष्टि में

ऋग्वेद- यह **सबसे प्राचीन वेद** है। इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण आदि देवताओं की स्तुतियाँ संग्रहीत हैं।

सामवेद - ऋग्वैदिक श्लोकों को गाने के लिए चुनकर धुनों में बाँटा गया और इसी पुनर्विन्यस्त संकलन का नाम 'सामवेद' पड़ा। इसमें दी गई ऋचाएँ उपासना एवं धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर **स्पष्ट तथा लयबद्ध रूप से गाई** जाती थीं।

यजुर्वेद - इसमें ऋचाओं के साथ-साथ गाते समय किये जाने वाले अनुष्ठानों का भी पद्य एवं गद्य दोनों में वर्णन है।
यह वेद **यज्ञ-संबंधी अनुष्ठानों पर** प्रकाश डालता है।

अथर्ववेद - यह वेद जनसामान्य की सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को जानने के लिए इस काल का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें लोक परम्पराओं, धार्मिक विचार, विपत्तियों और व्याधियों के निवारण संबंधी **तंत्र-मंत्र** संग्रहित हैं।
गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद से संबंधित है।

वेदत्रयी - ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद
संहिता - चारों वेदों का सम्मिलित रूप
उपनिषद् - 108 (प्रामाणिक 12)
पुराण - 18
वेदांग - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त (भाषा विगत), **छंद और ज्योतिष**

- इस काल में समाज का स्पष्ट विभाजन चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रिय (राजन्य), वैश्य और शूद्र में हो गया।
- इस काल में **यज्ञ** (Yajna) का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया, जिससे **ब्राह्मणों की शक्ति** में अपार **वृद्धि** हुई।
- इस काल में **वर्ण व्यवस्था** का आधार कर्म-आधारित (Profession-Based) न होकर **जन्म-आधारित** (Birth- Based) हो गया तथा वर्णों में कठोरता आने लगी।
- समाज में अनेक धार्मिक श्रेणियों (Religious Categories) का उदय हुआ, जो कि कठोर होकर विभिन्न जातियों (Castes) में बदलने लगी। अब व्यवसाय आनुवंशिक (Patrimonial) होने लगे।
- इस काल में समाज में अस्पृश्यता (Untouchability) की भावना का उदय नहीं हुआ था।

ऋग्वेद

- **आर्य जाति की प्राचीनतम रचना**
- रचना **पंजाब में**
- इसमें **10 भाग (मण्डल)** हैं। **1028 सूक्त, 10580 श्लोक** हैं।
- ऋग्वेद **मन्त्रों का एक संकलन** है जिन्हे यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए गाया जाता है।
- **होर्त / होत्र** - ऋग्वेद के मंत्र पढ़ने वाला
- **ऋचा**-ऋग्वेद के मंत्र
- ऋग्वेद का पहला और दसवां मण्डल सबसे नवीनतम है (बाद में जोड़े गये)
- तीसरे मण्डल में **देवी सूक्त** मिलता है।
  इसमें **गायत्री मंत्र** का उल्लेख है जो सावित्री को समर्पित है।
- तीसरे मण्डल की रचना **विश्वामित्र** ने की।
- सातवें मण्डल में **दसराज्ञ युद्ध** का विवरण मिलता है।

दशराज्ञयुद्→
- **रावी नदी** (परुषणी नदी)के तट पर लड़ा गया।
  त्रित्सु वंश vs दस जन
- भरत वंश (त्रित्सु वंश) के सुदास ने विश्वामित्र को पुरोहित पद से हटाकर वशिष्ठ को नियुक्त कर दिया।
- विश्वामित्र ने दस राजाओं का संघ बना लिया (प्रतिशोध) युद्ध किया।

- **ऋग्वेद में 1028 सूक्त है।**

1017+ 11 (परिशिष्ट) 1028 सूक्त

सामवेद

- साम का मतलब संगीत या गान
- यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मन्त्रों का संग्रह

- ***संगीत का प्राचीनतम स्त्रोतः*** *भारतीय संगीत का जनक*
- ***मंत्र सूर्य देवता को समर्पित***
- ***उद्गाता-*** *मन्त्रों को गाने वाला व्यक्ति*

यजुर्वेद

- *यज्ञों के नियम एवं विधि विधानों का संकलन [गद्य और पद्य दोनों में]*
- *अन्य तीनों वेद पद्य में हैं।*
- *इसे* ***गति या कर्म का वेद*** *भी कहा जाता है।*
- ***अध्वर्य- मंत्र पढ़ने वाले को अध्वर्य*** *कहते हैं।*
- *शून्य का उल्लेख मिलता है।*

अथर्ववेद

- *इसे* ***ब्रह्मवेद या श्रेष्ठ वेद*** *भी कहा जाता है।*
- *अथर्वा ऋषि का ज्ञान ही अथर्ववेद है।*
- *इसमें जादू, टोने-टोटके, अंधविश्वास व चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।*

ब्राह्मण साहित्य

- *ब्राह्मण ग्रंथों की रचना संहिताओं की व्याख्या करने के लिए गद्य में लिखे गये हैं।*
- *ये मुख्यतः दार्शनिक ग्रंथ हैं ।*

ऋग्वेद - ऐतरेय ब्राह्मण
कोषीतकी
यजुर्वेद- शतपथ ब्राह्मण
तेतरेय ब्राह्मण
सामवेद- पंचवीश ब्राह्मण
षडवीश ब्राह्मण
जैमिनीय ब्राह्मण
अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य

- *रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप में वनों (जंगलों) में लिखे गये।*

उपनिषद

- *भारतीय दार्शनिक विचारों का प्राचीनतम संग्रह है।*
- *भारतीय दर्शन का स्त्रोत अथवा पिता*
- *उपनिषदों की कुल संख्या 108*
- ***सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।***

वेदांग

वेदों को भली-भांति समझने के लिए छः वेदांगो की रचना की गई ।

शिक्षा
ज्योतिष
कल्प वेदों के शुद्ध उच्चारण में सहायक
व्याकरण
निरूक्त
छन्द
पुराण

- *ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया।*
- *इनकी संख्या 18 है।*
- *मत्स्य पुराण - सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक*
- *विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख*
- *वायु पुराण - गुप्त वंश का उल्लेख*

सूत्र साहित्य

- *वैदिक साहित्य को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए सुत्र साहित्य का प्रणयन ।*

स्मृति

- *ये न्याय ग्रंथ तथा समाज के संचालन से सम्बन्धित हैं।*

मनुस्मृति

- *शुंगकाल के दौरान लिखित*
- *प्राचीनतम स्मृति*

वैदिक काल

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू) *उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई.पू)*

ऋग्वैदिक काल

ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक सभ्यता का ***विस्तार 1500 ई.पू. से 1000 ई. पू.*** *तक माना जाता है।*

आर्यों का भौगोलिक विस्तार

- *आर्य सबसे पहले सप्त सैंधव प्रदेश में आकर बसे।*
- *इस प्रदेश में बहने वाली सात नदियों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।*

1. *सिन्धु*
2. *सरस्वती*
3. *शतुद्रि सतलज*
4. *विपाशा (व्यास)*
5. *परुष्णी (रावी)*
6. *वितस्ता (झेलम)*
7. *अस्किनी (चिनाब)*

- ऋग्वेद में कुछ अफगानिस्तान की नदियों का भी उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी।
  देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा
- मुजवन्त' नामक पहाड़ी चोटी का उल्लेख जो कि हिमालय में है।
- आर्यों ने अगले पड़ाव के रूप में कुरुक्षेत्र के निकट के प्रदेशों पर कब्जा कर उस क्षेत्र का नाम ब्रह्मवर्त (आर्यावृत्त) रखा ।
- आर्य निम्नलिखित कारणों से विजय होते थे
  - घोड़े चालित रथ
  - कांसे के उपकरण
  - कवच
- दास और दस्यु आर्यों के शत्रु थे।
- सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन

राजनीतिक जीवन

- आर्यों का जीवन यायावर जीवन था।
- आर्य कई जनों में विभक्त थे । इनमें पांच जनों के नाम मिलते हैं - अनु, द्रुह, यदु, पुरु, तुर्वस (पंचजन)
- आर्यों के कुल जन 25 थे ।
- राजनीतिक संगठन की सबसे छोटी इकाई कुल अथवा परिवार होता था।
- परिवार का स्वामी पिता अथवा बड़ा भाई होता था जिसे कुलप कहा जाता था।
- कई कुलों से मिलकर ग्राम बनता था।
- ग्राम का मुखिया ग्रामीणी
- ग्रामणी संभवतः नागरिक तथा सैनिक दोनों ही प्रकार के कार्य करता था।
- ग्राम से बड़ी संस्था विश होती थी।
- विश का स्वामी विशपति
- अनेक विशों का समूह जन होता था।
- जन का मुखिया राजा गोपागोपस्था जनपति कहलाता था।
- **कुल→ग्राम →विश→जन**
  कुलप ग्रामणी विशपति गोपस्य
- ऋग्वेद काल में राजतन्त्र का प्रचलन था ।
- राजा को जन का रक्षक - गोप्ता जनस्य दुर्गों का भेदन करने वाला - पुरानेता कहा गया है।
- दसवें मण्डल में गणतंत्रात्मक समिति का उल्लेख है।
- बलि शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है।
- एक व्यक्ति के जान की कीमत 10 गायें थी जिसे **शतदाय** कहा जाता था।
- महिलाओं को राजनीतिक एवं सम्पति संबधाधिकार प्राप्त नहीं था।
- पण, धन, राई- युद्ध में जीते हुए धन के नाम थे ।
- छोटे राजाओं को राजक, उससे बड़े को राजन तथा सबसे बड़े को सम्राट कहा जाता है।

प्रशासनिक संस्थाएँ

- सभा, समिति, विदथ, गण
- **सभा और समिति को अथर्ववेद में प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।**
- सभा एवं समिति राजा की निरकुंशता पर नियंत्रण रखती थी।
- सभा वृद्ध अथवा कुलीन मनुष्यों की संस्था थी।
- सभा का अध्यक्ष- सभ्य
- सभा के सदस्य - सुजान
- समिति सर्वसाधारण लोगों की संस्था
- समिति का अध्यक्ष- ईशान
- समिति का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य राजा का चुनाव करना होता था।
- ऋग्वेद में सभा का उल्लेख 8 बार तथा समिति का 9 बार उल्लेख हुआ है।
- पुरोहित युद्ध के समय राजा के साथ जाता था तथा उसकी विजय के लिए देवताओं से प्रार्थना करता था।
- सेनानी राजा के आदेशानुसार युद्ध में कार्य करता था।

सामाजिक जीवन

- पितृसतात्मक परिवार (संयुक्त)

→ समाज का आधार

- समाज तीन वर्णों में विभक्त- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- **वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित, व्यक्ति वर्ण बदल सकता था।**
- ऋग्वेद के 9 वें मण्डल में कहा गया है कि मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य है तथा मेरी मां अन्न पीसने वाली है ।
- महिलाओं को विदाई के समय जो धन उपहार दिया जाता था उसे **वहतु** कहा जाता था।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रो की रचना भी की।
- **विदुषी महिलाएँ-**
  शची, पौलोमी, कांक्षावृत्ति, घोंशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, विशपला, मुद्गलानी

- लोपामुद्रा अगस्त ऋषि की पत्नी थी।
- आर्य मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे।
- गाय विनिमय का माध्यम
  अध्या शब्द का प्रयोग (गाय के लिए)

आर्थिक जीवन

- संस्कृति ग्रामीण
- घोड़ा प्रिय पशु
  दधिका - एक देवी अश्व
- कृषि योग्य भूमि उर्वरा अथवा क्षेत्र कहलाती थी।
- सीता या कुण्ड हल से जुती भूमि
- करीब, गोबर की खाद
- व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः पणि वर्ग के लोग करते थे।
- पणि का अर्थ व्यापारी
- निष्क- विनिमय का माध्यम
  निष्क पहले आभूषण था बाद में सिक्के के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।
- कुलाल - मिट्टी के बर्तन बनाने वाला

धर्म और धार्मिक विश्वासन

- आर्यों का सबसे प्राचीन देवता द्यौस
- द्यौस आर्यों के पिता
- ऋग्वैदिक काल में सबसे महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र था।
- ऋग्वेद में $\frac{1}{4}$ या 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित
- इन्द्र युद्ध का देवता था।

ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लिखित शासन-प्रणालियाँ

पूर्व	साम्राज्य	सम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्यदेश	न्य	राजा

प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रतिपादक (Philosophies and their Expounders)

दर्शन (Philosophy)	प्रतिपादक (Expounder)
चार्वाक (भौतिकवाद)	चार्वाक
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तरमीमांसा	बादरायण
वैशेषिक	कणाद या उलूक

उत्तर वैदिक काल

- इस काल का समय 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक माना जाता है।
- इस काल का इतिहास ऋग्वेद के आधार पर विकसित साहित्यों से पता चलता है।
  ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
- अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता कहा गया है।
- राज्य के उच्च अधिकारी रत्नी
- विभाग के अध्यक्ष
- सेनानी - सेनापति ।
  सूत - रथसेना का नायक
  ग्रामणी- गांव का मुखिया
  संग्रहीता - कोषाध्यक्ष
  भागधुक – अर्थमंत्री
- शतपति संभवत 100 ग्रामों के समूह का अधिकारी होता था।
- श्रष्टिन- प्रधान व्यापारी
- माप की इकाईयां
- निस्ष्क, शतमान, पाद, कृष्णल
- बाट की मूल इकाई
- समाज चार वर्गों में विभक्त
  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

उत्तर वैदिक काल :-

- इस काल में तीनो वेदों सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के अतिरिक्त ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद और वेदांगो की रचना हुई।
- ये सभी ग्रंथ उत्तर वैदिक काल के साहित्यिक स्त्रोत माने जाते हैं ।
- **लोहे के प्रयोग** ने सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में क्रांति पैदा कर दी। उत्तर वैदिक काल में आर्यों का विस्तार अधिक क्षेत्र पर इसलिए हो गया क्योंकि अब वे लोहे के हथियार का उपयोग जान गए थे।
- यज्ञ-विधान क्रिया उत्तर वैदिक काल की देन है। **राजसूर्य यज्ञ का प्रचलन उत्तर वैदिक काल में हुआ।** यह राज्याभिषेक से संबंधित था । इस यज्ञ के दौरान राजा रानियों के घर जाता था।
- अश्वमेध यज्ञ शक्ति का द्योतक था।

प्रश्न-6. 'यज्ञ' संबंधी विधि विधानों का पता चलता है?

A. ऋग्वेद से B. सामवेद से
C. ब्राह्मण ग्रंथों से D. यजुर्वेद से

उत्तर – D

प्रश्न-7. प्रजापति की पुत्रियों के नाम हैं?

A. ऊषा व अदिति B. सभा व समिति
C. घोषा व अपाला D. उमा व सरस्वती

उत्तर – B

प्रश्न-8. ऋग्वेद में आर्य शब्द किसका वाचक है?

A. जाति B. धर्म
C. व्यवसाय D. गुण

उत्तर – D

प्रश्न-9. चारों आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ है?

A. मुण्डकोपनिषद् B. छान्दोग्योपनिषद्
C. वृहदारण्यकोपनिषद् D. जाबालोपनिषद्

उत्तर – D

मुख्य परीक्षा

1. **भारतीय वैदिक दर्शन की परंपरागत 6 शाखाओं में से किन्हीं चार का नामोल्लेख कीजिए।**
2. **भारतीय परंपरा में ऋण की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।**

अध्याय – 4
धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन

• आजीवक संप्रदाय

- आजीवक या आजीविक सम्प्रदाय दुनिया की प्राचीन दर्शन परम्परा में भारतीय जमीन पर विकसित प्रथम नास्तिकवादी या भौतिक वादी सम्प्रदाय था।
- इसकी स्थापना मक्खलिपुत्र गौंशाल द्वारा की गयी थी।
- ऐसा माना जाता है कि मक्खलिपुत्र गौंशाल पहले महावीर के शिष्य थे, किन्तु बाद में मतभेद हो जाने पर उन्होंने महावीर का साथ छोड़ दिया तथा आजीवक नामक स्वतंत्र सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आजीवक सम्प्रदाय लगभग 1002 ई. तक बना रहा।
- इनका मत नियतिवाद या भाग्यवाद पर आधारित था। जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है।
- इनके अनुसार मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- महावीर के समान गौंशाल भि ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे। तथा जीव और पदार्थ को अलग-अलग तत्व मानते थे।
- इस सम्प्रदाय के स्वयं के कोई ग्रंथ या अभिलेख वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं।
- इस सम्प्रदाय का उल्लेख तत्कालीन धर्मग्रंथों तथा अशोक के अभिलेखों के आलावा मध्यकाल के स्त्रोतों तक में मिलता है।
- ऐसा माना जाता है कि आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी (आजीवक भ्रमण) नग्न रहते थे तथा परिव्राजकों अर्थात् सन्यासियों की भांति घूमते थे। ईश्वर पुनर्जन्म और कर्म अर्थात् कर्मकाण्ड में इनका विश्वास नहीं था।
- ये जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे और समानता पर जोर देते थे।
- आजीवक सम्प्रदाय का तत्कालीन जनमानस और राज्यसत्ता पर काफी गहरा प्रभाव था।
- अशोक और उसके पोते दशरथ नए बिहार के जहानाबाद (पुराना "गया", जिला) स्थित बराबर की पहाड़ियों में सात गुफाओं का निर्माण कर उन्हें आजीवकों को समर्पित किया था।

					नियम) त्रिपिटक (बुद्ध के उपदेशों का संकलन) के अभिन्न अंग हैं।
द्वितीय संगीति	383 ई.पू.	वैशाली	साबकमीर (सुबुकामी)/ सर्वकामिनी	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्धसंघ में विभाजन-(1) स्थविर, (2) महासघिक
तृतीय संगीति	250/21 ई.पू.	पाटलिपत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	अभिधम्म पिटक (दार्शनिकसिद्धांत) का संकलन
चतुर्थ संगीति	प्रथम शताब्दी ईस्वी	कुंडलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म का विभाजन-(1) हीनयान, (2) महायान

बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव (Usability and impact of Buddhism)

1. <u>आर्थिक क्षेत्र में (In Economic Realm)</u>

- लोहे के तख्ता वाले हल से खेती, व्यापार और सिक्कों के प्रचलन से व्यापारियों और अमीरों को धन संचित करने का मौका मिला। लेकिन बौद्ध धर्म ने घोषणा की कि धन संचित नहीं करना चाहिए, क्योंकि धन दरिद्रता, घृणा क्रूरता और हिंसा का जनक है।
- इन बुराइयों को दूर करने के लिए भगवान बुद्ध ने उपदेश दिया कि किसानों को बीज और अन्य सुविधाएँ और श्रमिकों को मजदूरी मिलनी चाहिए तथा इन उपायों की अनुशंसा सांसारिक दरिद्रता को दूर करने के लिये की गई।
- संघ में कर्जदारों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया। इससे स्पष्ट महाजनों और धनवानों को लाभ हुआ क्योंकि कर्जदार अब बिना कर्ज चुकाए संघ में शामिल नहीं हो सकते थे।
- संघ में दासों का प्रवेश निषेध था। यदि उन्हें प्रवेश मिलता तो कृषि में गिरावट होती क्योंकि ज्यादातर दास कृषि क्षेत्रों से ही जुड़े हुए थे।

2. <u>सामाजिक क्षेत्र में (In Social Realm)</u>

- बौद्ध धर्म ने स्त्रियों और शूद्रों के लिए अपने द्वार खोलकर समाज पर गहरा प्रभाव जमाया क्योंकि जिसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया उन्हें अधिकारहीनता से मुक्ति मिली।
- बौद्ध धर्म ने अहिंसा और जीवमात्र के प्रति दया की भावना जगाकर देश में पशुधन में वृद्धि किया ।
- बौद्ध धर्म ने समाज में अंधविश्वास की जगह तर्क को वरीयता प्रदान की जिससे लोगों में बुद्धिवाद की परिकल्पना पनपी ।

3. <u>राजनीतिक क्षेत्र में (In Political Realm)</u>

- जिस शासक ने बौद्ध धर्म की स्वीकार किया, चाहे वह समकालीन हो या परवर्ती, अपनी नीति में अहिंसा को एक नीति के रूप में लागू किया, जैसे- अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर धम्म नीति का अनुसरण किया तथा लंबे समय तक शांति के साथ अपने साम्राज्य पर शासन किया।
- विभिन्न राष्ट्रों में बौद्ध धर्म का प्रसार होने से भारत के ऐतिहासिक काल में इन राष्ट्रों से मधुर संबंध तो थे ही, साथ ही साथ वर्तमान समय में भी द्विपक्षीय संबंधों को सुधारने में ऐतिहासिक संबंधों का जिक्र किया जाता है।

4. <u>साहित्य के क्षेत्र में (In Literary Realm)</u>

- बौद्धों ने अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन करने के लिये एक नए प्रकार से साहित्य सर्जना की।
- उन्होंने अपने लेखन से पालि भाषा को समृद्ध किया।
- ईसा की प्रथम तीन संदियों में पालि और संस्कृत को मिलाकर बौद्धों ने एक नई भाषा चलाई, जिसे मिश्रित (Hybrid) संस्कृत कहते हैं।
- बौद्ध विहार महान विद्या केंद्र हो गए, जिन्हें आवासीय विश्वविद्यालय की संज्ञा दी जा सकती है, जैसे- बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा गुजरात में वल्लभी विश्वविद्यालय उल्लेखनीय है।

प्रसिद्धि	चैतन्य सगुण भक्ति को महत्त्व देते थे। भगवान का वह सगुण रूप, जो अपरिमेय शक्तियों और गुणों से पूर्ण है, उन्हें मान्य रहा।

नामदेव जी

नामदेव का भक्ति आंदोलन में योगदान

बंगाल के ही समान महाराष्ट्र में भी भक्ति आंदोलन का प्रचार हुआ। यहाँ के मध्ययुगीन सुधारकों में नामदेव का नाम उल्लेखनीय है। उनका जन्म 1270 ई. में सतारा जिले में कन्हाड के समीप नरसीबमनी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेट तथा माता का नाम जोनाबाई था। वे छिपी जाति के थे। नामदेव को भक्ति की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली थी। उन्होंने अपना बचपन साधुओं की सेवा तथा सत्संग में व्यतीत किया।

संत **विसोबा खेचर** उनके गुरु थे। **संत ज्ञानेश्वर** के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था। ज्ञानेश्वर के साथ उन्होंने कई स्थानों का भ्रमण किया तथा साधु-संतो से परिचय प्राप्त किया। उनकी मृत्यु के बाद नामदेव महाराष्ट्र छोड़कर पंजाब के गुरुदासपुर जिले में स्थित घोमन नामक गाँव में जाकर बस गये। यहीं से उन्होंने अपने मत का प्रचार किया । हिन्दू तथा सिख दोनों ही उनके भक्त बन गये । नामदेव भी निरगुणवादी थे। उन्होंने मूर्ति-पूजा तथा धर्म के बाह्याडंबरों का विरोध करते हुये प्रेम, भक्ति एवं समानता का उपदेश दिया। उनका कहना था, कि परमात्मा ही सब कुछ है। उसके अलावा कोई दूसरी सत्ता नहीं है। वहीं सभी में व्याप्त है। अतः एकान्त में उसी का ध्यान करना चाहिए । भक्ति को उन्होंने मोक्ष का साधन स्वीकार किया। नामदेव की एक भक्त के रूप में महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत में इतनी अधिक प्रतिष्ठा थी, की कबीर ने भी आदरपूर्वक उनका स्मरण किया है। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के भी समर्थक थे । सभी जातियों के लोगों को उन्होंने अपना अनुयायी बनाया। वे **मराठी भाषा** तथा साहित्य के प्रमुख कवि थे। मराठी भाषा के माध्यम से उन्होंने महाराष्ट्र की जनता में एक नई चेतना जगाई ।

चार्वाक दर्शन (भौतिकवाद)

चार्वाक दर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा यह सिद्धांत पारलौकिक सत्ताओं को स्वीकार नहीं करता है। इसके दर्शन प्रवर्तक चार्वाक ऋषि थे ।

इस दर्शन को वेदबाह्य (चार्वाक, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक, और आर्हत(जैन) भी कहा जाता है।

चार्वाक सिद्धांतों के लिए बौद्ध पिटकों में 'लोकायत' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका मतलब 'दर्शन की वह प्रणाली है, जो इस लोक में विश्वास करती है लेकिन स्वर्ग, नरक अथवा मुक्ति की अवधारणा में विश्वास नहीं रखती है।

चार्वाक दर्शन के अनुसार पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु ये चार ही तत्त्व सृष्टि के मूल कारण हैं। उनके मत में आकाश नामक कोई तत्त्व है ही नहीं।

इस दर्शन में कहा गया है, कि "यावज्जीवेत सुखं जीवेद ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत, भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"

अर्थात् जब तक जीना है, सुख से जीना चाहिये, अगर अपने पास साधन नहीं है, तो दूसरे से उधार लेकर सुख से रहना चाहिए, शमशान में शरीर के जलने के बाद शरीर वापस कहां आता है?

चार्वाक दर्शन के प्रमुख मत-

सुखवाद- सर्वदर्शनसंग्रह में चार्वाक के मतानुसार सुख को ही इस जीवन का मुख्य लक्ष्य बताया गया है।

अनात्मवाद- चार्वाक आत्मा को पृथक् कोई पदार्थ नहीं मानते हैं। उनके अनुसार शरीर ही आत्मा है। इसकी सिद्धि के तीन प्रकार हैं- तर्क, अनुभव और आयुर्वेद शास्त्र।

तर्क से आत्मा की सिद्धि के लिये चार्वाक लोग कहते हैं कि शरीर के रहने पर चैतन्य रहता है और शरीर के न रहने पर चैतन्य नहीं रहता। इस प्रकार शरीर ही चैतन्य का आधार अर्थात आत्मा है यह सिद्ध होता है।

अनुभव 'मैं स्थूल हूँ, 'मैं दुर्बल हूँ, 'मैं गोरा हूँ, 'मैं निष्क्रिय हूँ इत्यादि अनुभव हमें पग-पग पर होता है। स्थूलता दुर्बलता इत्यादि शरीर के धर्म हैं और 'मैं भी वही हैं। अतः शरीर ही आत्मा है।

आयुर्वेद जिस प्रकार गुड, जौ, महुआ आदि को मिला देने से काल क्रम के अनुसार उस मिश्रण में मद्य उत्पन्न होती है, अथवा दही, पीली मिट्टी और गोबर के परस्पर मिश्रण से उसमें बिच्छू पैदा हो जाता है उसी

प्रकार चतुर्भूतों (पृथ्वी, जल, तेज और वायु) के विशिष्ट सम्मिश्रण से चैतन्य (चेतना) उत्पन्न हो जाता है।

धर्म दर्शन

सांख्य दर्शन

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन प्राचीनतम दर्शन है। इस दर्शन के प्रवर्तक "महर्षि कपिल" हैं। आचार्य गौतम बुद्ध ने भी सांख्य दर्शन का अध्ययन किया। क्योंकि उनके गुरु आलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान थे। उन्होंने गौतम बुद्ध को सांख्य का उपदेश दिया। जिससे उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह घर त्याग कर चले गए।

सांख्य दर्शन मुख्यतः दो (2) तत्वों को मानता है। 1. प्रकृति 2.पुरुष इन दो तत्वों से ही सांख्य दर्शन के अन्य (23) तत्वों की उत्पत्ति होती है। सांख्य में प्रकृति को अचेतन कहा गया है और वहीं पुरुष को चेतन। जब पुरुष का प्रतिबिंब (छाया) प्रकृति के ऊपर पड़ता है। तब सृष्टि प्रक्रिया आरंभ होती है। यह सांख्य दर्शन का मत है।

सांख्य दर्शन में तत्त्व

सांख्य दर्शन में 25 तत्व हैं। इन तत्वों का सम्यक् ज्ञान जीव को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करता है। सांख्य का अर्थ ही है- तत्वों का ज्ञान। जिससे जीव मुक्ति पा सके। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने सांख्य दर्शन का उपदेश अर्जुन को दिया। सांख्य दर्शन के विभिन्न आचार्य हुए। लेकिन आज के समय में सांख्य दर्शन का जो प्रामाणिक ग्रंथ मिलता है। वह ग्रंथ है- "सांख्य-कारिका"। इसका श्रेय आचार्य ईश्वर कृष्ण को जाता है।

ईश्वर कृष्ण ने अपनी सांख्यकारिका में आचार्य कपिल के सूत्रों (सांख्यसूत्र) को कारिका बद्ध करके पाठकों के लिए सहज और अर्थ दृष्टि से भी सरल बनाया है। सांख्य-कारिका विभिन्न लेखकों, संपादकों द्वारा रचित है। लेकिन डॉ. विमला कर्नाटका द्वारा लिखित सांख्य-कारिका प्रचलित तथा बोधगम्य है।

सांख्य के 25 तत्वों का विवरण -

सांख्य दर्शन में क्रमशः 25 तत्त्व माने गए हैं। पच्चीस तत्त्व हैं- प्रकृति, पुरुष, महत् (बुद्धि), अहंकार, पंच ज्ञानेन्द्रिय (चक्षु, श्रोत, रसना, घ्राण, त्वक्), पंच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ), मन, पंच- तंमात्र (रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श) पंच-महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)।

सांख्य दर्शन सूत्रबद्ध होने की वजह से पढ़ने में कठिन था। लेकिन उसका कारिकाबद्ध होने से पढ़ने में सुविधा हुई। जब तक सांख्य दर्शन सूत्रों में था, तब तक उसे कुछ विद्वान ही पढ़ पाते थे। लेकिन सूत्र से कारिका और कारिका से तत्त्व-कौमुदी के विकास ने सांख्य दर्शन को जीवित कर दिया और उसको अनेक विद्वान व छात्र सहर्ष पढ़ने लगे।

सांख्य दर्शन का प्रमुख सिद्धांत -

सांख्य का मुख्य सिद्धांत सत्कार्यवाद है। जिससे सत् से सत् की उत्पत्ति आदि पांच हेतु माने गए हैं। सांख्य दर्शन ईश्वर को नहीं मानता, इसीलिए इसे निरीश्वरवाद भी कहते हैं। यह दर्शन पुरुष को आत्मा और प्रकृति को माया आदि नामों से पुकारा जाता है।

सांख्य दर्शन का सर्वोत्कृष्ट तत्त्व बुद्धि को माना गया है। जिसे हम महत् के नाम से भी जानते हैं। क्योंकि बुद्धि के द्वारा ही हमें सत्य और असत्य का भान होता है। इसीलिए इसे विवेकी भी कहा गया है। सांख्य में बुद्धि के 8 धर्म बताये गए हैं- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य। बुद्धि के यह 8 धर्म ही मनुष्य को सद्गति व अधोगति की ओर ले जाने का कार्य करते हैं।

सांख्य दर्शन शास्त्र में मुक्ति -

सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति बताई गई हैं। 1. देह-मुक्ति 2. विदेह-मुक्ति। देह-मुक्ति का तात्पर्य है- शरीर की मुक्ति और विदेह-मुक्ति से तात्पर्य है- जन्म-मरण प्रक्रिया से सदैव के लिए मुक्ति व सूक्ष्म शरीर की मुक्ति।

सांख्य दर्शन को विभिन्न भारतीय दर्शनों में यत्र-तत्र सर्वत्र पढ़ा जा सकता है। श्रुति लेखानुसार- सभी दर्शनों की उत्पत्ति सांख्य दर्शन से मानी गई है। सर्व प्राचीन दर्शन होने का गौरव सांख्य दर्शन को ही प्राप्त है।

योगदर्शन

पतंजलि योगसूत्र का परिचय

योगदर्शन एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और साधकों के लिये परम उपयोगी ग्रंथ है। जिस प्रकार पूर्व में हमने महर्षि पतंजलि के **सम्पूर्ण जीवन परिचय** वाली पोस्ट में चर्चा की थी की योगसूत्र ग्रंथ महर्षि पतंजलिकृत सभी ग्रंथों में से एक है। इसमें अन्य

गुप्त वंश

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था। मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही।
- कुषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई **राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।**
- गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था।

गुप्त वंश की उत्पत्ति

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने पूना अभिलेख में अपने वंश को स्पष्टतः धारण गोत्रीय बताया हैं। अग्रवालों के 18 गोत्र में से एक गोत्र धारण हैं।
- गुप्त वैश्यों की उपाधि हैं, आज भी धार्मिक कर्म व संकल्प करते हुए वैश्य पुरोहित नाम व गोत्र के साथ गुप्त उपनाम का उल्लेख करते हैं।
- गुप्त शासकों के नाम श्री, चन्द्र, समुद्र, स्कन्द आदि थे। जबकि गुप्त उनका उपनाम था, जो की उनके वर्ण व जाति को उद्घोषित करता हैं।
- गुप्त उपनाम केवल और केवल वैश्य समुदाय के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता हैं। **इतिहास में व पुराणों में गुप्त सम्राटों को वैश्य बताया गया है।**
- गुप्त वंश के शासक अग्रवाल थे। प्रख्यात इतिहासकार राहुल संस्क्रतायन ने भी गुप्त वंश को अग्रवाल वैश्य बताया हैं।
- अग्रवालों की कुलदेवी माता लक्ष्मी हैं। गुप्त सम्राटों की कुलदेवी भी माता लक्ष्मी हैं। अग्रवाल मुख्यतः वैष्णव होते हैं और शुद्ध शाकाहारी भी गुप्त वंश के शासक भी वैष्णव और शाकाहारी थे। **गुप्त वंश के समय में भारत सोने की चिड़िया कहलाया था।** एक विशुद्ध वैश्य शासक ही व्यापार को बढ़ावा दे सकता हैं।

गुप्त वंश के शासक

घटोत्कच (280-320 ई.)

- गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र घटोत्कच राजगद्दी पर बैठा।
- इसने 280 ई. से 320 ई. तक शासन किया। इसने महाराजा की उपाधि धारण की थी।
- उत्पन्न होते समय उसके सिर पर केश (उत्कच) न होने के कारण उसका नाम घटोत्कच रखा गया।
- वह अत्यन्त मायावी था जिस कारण वो जन्म लेते ही बड़ा हो गया था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- अपने पिता घटोत्कच के बाद सन् 319 / 320 ई. में चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना। चन्द्रगुप्त, गुप्त वंशावली में पहला स्वतंत्र शासक था।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। बाद में लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- यहीं से उसका साम्राज्य विस्तार हुआ। उसने सफलता पूर्वक लगभग पंद्रह वर्ष (320 ई. से 335 ई. तक) तक शासन किया।
- चन्द्रगुप्त ने एक गुप्त संवत (319-320 ई.) चलाया कदाचित इसी तिथि को चन्द्रगुप्त प्रथम का राज्याभिषेक हुआ था।

समुद्रगुप्त (335 – 375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद 335 ई. में उसका तथा कुमारदेवी का पुत्र समुद्रगुप्त राजगद्दी पर बैठा।
- सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास में महानतम शासकों के रूप में वह नामित किया जाता हैं। इन्हें **परक्रमांक** कहा गया हैं।
- **समुद्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता हैं।** इस साम्राज्य की **राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- समुद्रगुप्त ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक असाधारण सैनिक योग्यता वाला महान विजित सम्राट था। **विन्सेट स्मिथ ने इन्हें नेपोलियन की उपाधि दी।**
- उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान दक्षिण की तरफ **(दक्षिणापथ)** था। इसमें उसकी बारह विजयों का उल्लेख मिलता हैं।
- समुद्रगुप्त एक अच्छा राजा होने के अतिरिक्त एक अच्छा कवि तथा संगीतज्ञ भी था। उसे कला मर्मज्ञ भी माना जाता हैं।

- उसका देहान्त 375 ई. में हुआ जिसके बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय राजा बना। यह उच्चकोटि का विद्वान तथा विद्या का उदार संरक्षक था।
- उसे कविराज भी कहा गया है। वह महान संगीतज्ञ था जिसे वीणा वादन का शौक था।
- इसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को अपना मन्त्री नियुक्त किया था।
- हरिषेण, समुद्रगुप्त का मंत्री एवं दरबारी कवि था। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार के संबंध में सटीक जानकारी प्राप्त होती है।
- **काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चन्द्रप्रकाश' मिलता है।**
- उसने उदार, दानशील, असहायी तथा अनाथों को अपना आश्रय दिया।
- वैदिक धर्म के अनुसार इन्हें धर्म व प्राचीर बन्ध यानी धर्म की प्राचीर कहा गया है।
- **समुद्रगुप्त का साम्राज्य**- समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी से पश्चिम में पूर्वी मालवा तक विस्तृत था। कश्मीर, पश्चिमी पंजाब,पश्चिमी राजस्थान, सिन्ध तथा गुजरात को छोड़कर समस्त उत्तर भारत इसमें सम्मिलित थे। दक्षिणापथ के शासक तथा पश्चिमोत्तर भारत की विदेशी शक्तियाँ उसकी अधीनता स्वीकार करती थीं ।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375-415)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई. में सिंहासन पर आसीन हुआ। वह समुद्रगुप्त की प्रधान महिषी दत्तदेवी से हुआ था।
- वह विक्रमादित्य के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। उसने 375 से 415 ई. तक (40 वर्ष) शासन किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों पर अपनी विजय हासिल की जिसके बाद गुप्त साम्राज्य एक शक्तिशाली राज्य बन गया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में क्षेत्रीय तथा सांस्कृतिक विस्तार हुआ।
- हालांकि चन्द्रगुप्त द्वितीय का अन्य नाम देव, देवगुप्त, देवराज, देवश्री आदि हैं। उसने विक्रमांक, विक्रमादित्य, परम भागवत आदि उपाधियाँ धारण की।
- उसने नागवंश, वाकाटक और कदम्ब राजवंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नाग राजकुमारी कुबेर नागा के साथ विवाह किया जिससे एक कन्या प्रभावती गुप्त पैदा हुई।
- वाकाटकों का सहयोग पाने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय के साथ कर दिया।
- उसने प्रभावती गुप्त के सहयोग से गुजरात और काठियावाड़ की विजय प्राप्त की।
- वाकाटकों और गुप्तों की सम्मिलित शक्ति से शकों का उन्मूलन किया।
- **कदम्ब राजवंश का शासन कुंतल (कर्नाटक) में था।** चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब वंश में हुआ।
- शक उस समय गुजरात तथा मालवा के प्रदेशों पर राज कर रहे थे। शकों पर विजय के बाद उसका साम्राज्य न केवल मजबूत बना बल्कि उसका पश्चिमी समुद्री पत्तनों पर अधिपत्य भी स्थापित हुआ।
- इस विजय के पश्चात उज्जैन गुप्त साम्राज्य की राजधानी बना। विद्वानों को इसमें संदेह है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा विक्रमादित्य एक ही व्यक्ति थे।
- उसके शासनकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान ने 399 ईस्वी से 414 ईस्वी तक भारत की यात्रा की। उसने भारत का वर्णन एक सुखी और समृद्ध देश के रूप में किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल को स्वर्ण युग भी कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त एक महान प्रतापी सम्राट था। उसने अपने साम्राज्य का और विस्तार किया।
- **शक विजय**- पश्चिम में शक क्षत्रप शक्तिशाली साम्राज्य था। ये गुप्त राजाओं को हमेशा परेशान करते थे। शक गुजरात के काठियावाड़ तथा पश्चिमी मालवा पर राज करते थे। 389 ई. 412 ई. के मध्य चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकों पर आक्रमण कर विजित किया।
- **वाहीक विजय** - महाशैली स्तम्भ लेख के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सिन्धु के पाँच मुखों को पार कर वाहिकों पर विजय प्राप्त की थी। वाहिकों का समीकरण कुषाणों से किया गया है, पंजाब का वह भाग जो व्यास का निकटवर्ती भाग है।
- **बंगाल विजय**- महाशैली स्तम्भ लेख के अनुसार यह ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने बंगाल के शासकों के संघ को परास्त किया था।

गुप्तकालीन मंदिरों की विशेषताएँ

- गुप्त कालीन मंदिरों की अपनी ही अलग विशेषताएं थी जो निम्न हैं –
- गुप्तकालीन मंदिरों को **ऊँचे चबूतरों** पर बनाया जाता था, जिनमें **ईंट तथा पत्थर** जैसी स्थायी सामग्रियां प्रयोग में लायी जाती थीं । जिस पर चढ़ने के लिये चारों ओर से सीढ़ियाँ बनी होती थी तथा मंदिरों की **छत सपाट** होती थी।
- आरंभिक गुप्तकालीन मंदिरों में शिखर नहीं होते थे। मंदिरों का गर्भगृह बहुत साधारण होता था। गर्भगृह में देवताओं को स्थापित किया जाता था।
- शुरुआती गुप्त मंदिरों में अलंकरण देखने को नहीं मिलता हैं, परन्तु बाद के स्तम्भों, मंदिरों की दीवार चौखट आदि पर मूर्तियों द्वारा अलंकरण देखने को मिलता है।
- विष्णु मंदिर नक्काशीदार हैं। इसके प्रवेश द्वार पर मकरवाहिनी गंगा, यमुना, शंख व पद्म की आकृतियाँ बनी हैं।
- कई मंदिरों में गुप्तकालीन स्थापत्य कला देखने को मिलती हैं, गुप्तकालीन **मंदिरों की विषय-वस्तु रामायण, महाभारत और पुराणों से ली गई हैं।**
- प्रारंभिक मंदिरों की छतें चपटी होती थी, किन्तु आगे चलकर शिखर भी बनाये जाने लगे ।
- मंदिर के वर्गाकार स्तम्भों के शीर्ष भाग पर चार सिंहों की मूर्तियाँ एक दूसरे से पीठ सटाये हुए बनाई गयी हैं।
- गुप्तकाल के अधिकांश मंदिर पाषाण निर्मित हैं। केवल भीतरगाँव तथा सिरपुर के मंदिर ही ईंटों से बनाये गये हैं।

गुप्त काल के कुछ प्रमुख मंदिर इस प्रकार हैं –

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था।
- मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं।
- मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।

गुप्त वंश का पतन

- 5वीं शताब्दी के आसपास उत्तरी भारत में गुप्त वंश का पतन आरम्भ हो गया था, गुप्त काल के समय के राज्य, छोटे-2 स्वतंत्र राज्यों में बंट गये व विदेशी हूणों का आक्रमण भी इसके पतन में एक महतवपूर्ण भूमिका निभाता है।
- हूणों का नेता तोरामोरा था जो गुप्त साम्राज्य के बड़े हिस्से हड़पने में सफल रहा। उसका पुत्र मिहिराकुल बहुत निर्दय व बर्बर तथा सबसे तानाशाह व्यक्ति था। दो स्थानीय शक्तिशाली राजकुमारों मालवा के यशोधर्मन और मगध के बालादित्य ने उसकी शक्ति को कुचला तथा भारत में उसके साम्राज्य को समाप्त कर दिया ।

गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनायें

- गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता हैं। **बार्नेट के अनुसार** 'प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्त काल का वह महत्त्व है जो यूनान के इतिहास में पेरिक्लीयन युग का है।'
- **स्मिथ ने गुप्त काल की तुलना ब्रिटिश इतिहास के 'एलिजाबेथन' तथा 'स्टुअर्ट'** के कालों से की हैं।
- गुप्त काल को श्रेष्ठ कवियों का काल माना जाता हैं।

हरिषेण

- हादण्डनायक ध्रुवभूति का पुत्र हरिषेण समुद्रगुप्त के समय में सन्धि विग्रहिक कुमारामात्य एवं महादण्डनायक के पद पर कार्यरत था।
- हरिषेण की शैली के विषय में जानकारी 'प्रयाग स्तम्भ' लेख से मिलती हैं।
- हरिषेण द्वारा स्तम्भ लेख में प्रयुक्त छन्द कालिदास की शैली की याद दिलाते हैं।
- हरिषेण का पूरा लेख **'चंपू (गद्यपद्य-मिश्रित)** शैली' का एक अनोखा उदाहरण हैं। इनके द्वारा रचित महाकाव्य –

शाव (वीरसेन)

- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** के समय में सन्धिविग्रहिक अमात्य पद पर कार्यरत शाव की **काव्य शैली** के विषय में जानकारी **एकमात्र स्त्रोत 'उदयगिरि गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण लेख हैं।** लेख के आधार पर यह माना जाता हैं कि शाव व्याकरण, न्याय एवं राजनीति का ज्ञाता एवं पाटिलिपुत्र का निवासी था।

C. बाबर
D. मोहम्मद –बिन- तुगलक उत्तर - B

प्रश्न-4. गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर 1025 ई. में किसने आक्रमण किया था?

A. मुहम्मद गौरी
B. महमूद गजनबी
C. बाबर
D. मोहम्मद बिन तुगलक
उत्तर - B

प्रश्न-5. भारत में तुर्क साम्राज्य का श्रेय किसे दिया जाता है?

A. मुहम्मद गौरी
B. बाबर
C. महमूद गजनबी
D. हुमायूँ
उत्तर - A

प्रश्न-6. मुहम्मद गौरी को भारत में सर्वप्रथम किसने पराजित किया?

A. विद्याधर चंदेल
B. मूलराज - प्रथम
C. मूलराज - द्वितीय
D. विद्यापति उत्तर - C

प्रश्न-7. तराइन का प्रथम युद्ध मुहम्मद गौरी ने किसके बीच लड़ा?

A. पृथ्वीराज - प्रथम
B. पृथ्वीराज – द्वितीय
C. पृथ्वीराज - तृतीय
D. पृथ्वीराज – चतुर्थ उत्तर - C

प्रश्न-8. तराइन का द्वितीय युद्ध कब हुआ?

A. 1191 ई.
B. 1192 ई.
C. 1193 ई.
D. 1194 ई.
उत्तर - B

प्रश्न-9. तराइन का प्रथम युद्ध कब हुआ था?

A. 1191 ई.
B. 1192 ई.
C. 1193 ई.
D. 1194 ई.
उत्तर – A

अध्याय – 2
दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

- 1. गुलाम वंश / मामलुक वंश (1206-1290)
- 2. खिलजी वंश (1290-1320)
- 3. तुगलक वंश (1320-1414)
- 4. सैयद वंश (1414-1451)
- 5. लोदी वंश (1451-1526)
- इनमें से चार वंश मूलतः तुर्क थे जबकि अंतिम वंश लोदी वंश अफगान था।

प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ

गुलाम वंश के शासक :-
कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई. तक)

- **भारत में तुर्की राज्य / दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।**
- **1192 ई. के तराइन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।**
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया **(खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे)**खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ में इंद्रप्रस्थ दिल्ली के पास को सैन्य मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास)के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है ।
- **कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ करवाया। उसने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा**

अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा मस्जिद का निर्माण करवाया।

- **कुरान के अध्यायों का सुरीले स्वर में उच्चारण करने के कारण ऐबक को कुरान खां** कहा जाता था। अपनी **उदारता के कारण इसको लाख बख्श कहा जाता था।**

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- ऐबक की मृत्यु के बाद कुछ इतिहासकारों के अनुसार आरामशाह लाहौर में नया शासक बना, लेकिन दिल्ली के तुर्की अमीरों ने इल्तुतमिश को नया सुल्तान घोषित किया।
- **इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था।** इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- **इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था (1 टंका =48 जीतल)**
- **यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।**
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। **भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था।**
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- **1235 में ग्वालियर का अभियान** -इस अभियान के दौरान **इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।**
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग मे इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।

रूकनुद्दीन फिरोजशाह (1236)

- इल्तुतमिश एवं खुन्दाबन्दे जहांशाह तुर्का या शाहतुर्कान की सन्तान रूकनुद्दीन फिरोजशाह उसका दूसरा पुत्र था।
- यद्यपि इल्तुतमिश ने अपना उत्तराधिकारी रजिया को बनाया था परन्तु प्रान्तीय सूबेदारों एवं शाहतुर्कान ने षडयंत्र कर रूकनुद्दीन को शासक बनवा दिया। उसे शासक बनाने में मुख्य भूमिका प्रांतीय सूबेदारों की थी।
- शाहतुर्कान एक तुर्क दासी थी।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली महिला थी जिसने शासन को नियंत्रित करने का प्रयास किया।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

- सुल्ताना रजिया (उसका पुरा नाम जलॉलात उद-दिन-रजिया था) का जन्म 1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत - उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की।
- **रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरूषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार में कारवाई में हिस्सा लिया।**
- **दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया।**

- **बलबन ने ईरानी परम्पराओं के अनुसार कई परम्पराएं आरंभ करवाई उसे ''सिजदा'' (भूमि पर लेट कर अभिवादन करना (और 'पैबोस' (सुल्तान के चरणों को चूमना (जैसी व्यवस्था भी लागू की जिनका उद्देश्य साफ तौर पर सुल्तान की प्रतिष्ठा में वृद्धि करना था।**
- *बलबन के दरबार में प्रत्येक वर्ष ईरानी त्यौहार 'नौरोज' काफी धूमधाम से मनाया जाता था इसकी शुरुआत बलबन के समय से ही हुई।*
- *बलबन ने नवरोज उत्सव शुरू करवाया, जो फारसी (ईरानी)रीति-रिवाज पर आधारित था।*
- **बलबन के दरबार में फारसी के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरों एं अमीर हसन रहते थे** *अमीर खुसरों ने अपना साहित्यक जीवन शहजादा मुहम्द के संरक्षण में शुरू किया ।*
- **बलबन ने चालीसा का दमन कर दिया क्योंकि यहीं संस्था राजनीतिक अस्थिरता के लिए उत्तरदायी थी ।**
- *चालीसा द्वारा इल्तुतमिश के बाद के 30 वर्षों में उसके वंश के 5 शासक बनाये गये और मारे गये। यह साजिश का केन्द्र था और इसी के कारण सुल्तान का पद गौरवहीन था।*

<u>कैकुबाद अथवा 'कैकोबाद' (1287-1290 ई.)</u>

- *17-18 वर्ष की अवस्था में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया गया था।*
- *कैकूबाद के पूर्व बलबन ने अपनी मृत्यु के पूर्व कैखुसरों को अपना उतराधिकारी नियुक्त किया था। लेकिन दिल्ली के कोतवाल फखरुद्दीन मुहम्मद ने बलबन की मृत्यु के बाद कूटनीति के द्वारा कैखुसरों को मुल्तान की सूबेदारी देकर कैकुबाद को दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा दिया।*
- **अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता ने कैकुबाद के समय में यात्रा की थी, उसने सुल्तान के शासन काल को 'एक बड़ा समारोह' की संज्ञा दी।**
- **कालान्तर में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने उचित अवसर देखकर शम्सुद्दीन का वध कर दिया।**
- *शम्सुद्दीन की हत्या के बाद जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने दिल्ली के तख्त पर स्वयं अधिकार कर लिया।*
- **इस प्रकार से बाद में दिल्ली की राजगद्दी पर खिलजी वंश की स्थापना हुई।**

<u>खिलजी वंश (1290-1320 ई.)</u>

<u>जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96 ई.)</u>

- *कैमूर्स की हत्या कर जलालुद्दीन ने खिलजी वंश की स्थापना की*
- **1290 ई. में जलालुद्दीन ने** *कैकुबाद द्वारा निर्मित किलोखरी किले में* **स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया।**
- *जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने उदार धार्मिक नीति अपनाई। उसने* **घोषणा करी की शासन का आधार शासितों (प्रजा) की इच्छा होनी चाहिए।** *ऐसी घोषणा करने वाला यह प्रथम शासक था। अपनी उदार नीति के कारण जलालुद्दीन ने अपने शत्रुओं को भी उच्च पद दिये थे ।*
- *जलालुद्दीन 70 वर्ष (सर्वाधिक वृद्ध सुल्तान) की उम्र में सुल्तान बना था। यहीं कारण है कि उसके विचार उसकी उम्र से प्रभावित थे।*
- *जलालुद्दीन फिरोज खिलजी धार्मिक सहिष्णु व्यक्ति था, लेकिन 1291-92 ई. में सुल्तान ने ईरानी संत सीद्दी मौला को सुल्तान की आलोचना करने पर मृत्यु दंड दिया।*

<u>जलालुद्दीन खिलजी द्वारा किये गये अभियान</u>

- *1291 ई. में जलालुद्दीन ने रणथम्भौर अभियान किया लेकिन जीत नहीं सका ।*
- **1292 ई. में अब्दुल्ला के नेतृत्व में मंगोलों ने आक्रमण किया** *जिसे जलालुद्दीन द्वारा पराजित किया गया।*
- *1292 ई. में ही मंडौर (जोधपुर) को जीता तथा सल्तनत में मिलाया*
- *1294 ई. में अली गुर्शस्प (अलाउद्दीन खिलजी) द्वारा मालवा व भिलसा (मध्यप्रदेश) को जीता। मालवा अभियान के समय अलाउद्दीन खिलजी ने उज्जैन, धारा नगरी, चंदेरी के मंदिरों को नष्ट किया।*
- *अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 ई. में धोखे से जलालुद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गयी ।*

<u>प्रमुख कवि</u>

अमीर खुसरो तथा हसन देहलवी

<u>अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)</u>

- *अलाउद्दीन खिलजी, खिलजी वंश के दुसरे शासक थे।*

- उसको अपने आपको दूसरा अलेक्जेंडर बुलवाना अच्छा लगता था, उसे सिकन्दर-आई-सनी का ख़िताब दिया गया था। खिलजी ने अपने राज्य में शराब की खुले आम बिक्री बंद करवा दी थी।
- **वे पहले मुस्लिम शासक थे, जिन्होंने दक्षिण भारत में अपना साम्राज्य फैलाया था,** और जीत हासिल की थी।
- **खिलजी के साम्राज्य में उनके सबसे अधिक वफादार जनरल थे मलिक काफूर** और खुश्रव खान।

मंगोल आक्रमण

- **दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी के काल में हुआ।**
- अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि उसके काल में कुल 6 मंगोल आक्रमण हुए। उसके शासन काल में मंगोल खतरा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।
- अलाउद्दीन ने मंगोलों के प्रति रक्त एवं युद्ध पर आधारित अग्रगामी नीति का अनुसरण किया। ऐसा करने वाला पहला सुल्तान था। महत्त्वपूर्ण है कि इसी समय मंगोल शासक दवा खान ने अफगानिस्तान को रौंदने के बाद रावी नदी तक अपने शासन का विस्तार किया।
- सर्वप्रथम उसी ने दिल्ली विजय की नीति अपनायी और अपने पुत्रों को भारत पर आक्रमण करने हेतु भेजा। **मंगोलों की दिल्ली विजय की नीति 1306 ई. में दवा खान की मृत्यु के बाद ही खत्म हो पायी।**
- **सीरी को नयी राजधानी के रुप में विकसित किया। पहली बार दिल्ली के चारों ओर एक रक्षात्मक चार दीवारी बनायी गयी।**
- सीमान्त प्रदेश की रक्षा लिए एक पृथक सेना और एक सीमा रक्षक का पद लाया। इस पर पहली नियुक्ति गाजी मलिक (गियासुद्दीन तुगलक) की हुई। उसे 1305 ई. में पंजाब का सूबेदार बनाया गया। गाजी मलिक प्रतिवर्ष मंगोल क्षेत्रों पर आक्रमण करके उन्हें आतंकित करता था।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320ई.)

- कुतुबुद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत के खिलजी वंश का शासक अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर ने एक वसीयत नामा पेश किया, जिसमें अलाउद्दीन के पुत्रों (खिज्र खां, शल्दी खां, मुबारक खां) के स्थान पर खिज्र खां के नाबालिक पुत्र शिहाबुद्दीन उमर को सुल्तान बनाया गया।
- तुर्की सरदारों ने विद्रोह किया तथा मलिक काफूर की हत्या कर मुबारक खिलजी को नाबालिक सुल्तान घोषित कर नायब-ए-ममलिकात बना दिया।
- मुबारक खिलजी ने शिहाबुद्दीन उमर की हत्या कर दी तथा **कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी नाम से सुल्तान बना। इसने स्वयं को खलीफा घोषित किया जो सल्तनत काल का ऐसा करने वाला एकमात्र शासक था।**
- **अलाउद्दीन खिलजी की कठोर दण्ड व्यवस्था एवं बाज़ार नियंत्रण आदि व्यवस्था को उसने समाप्त कर दिया था।**
- अप्रैल 1320 ई. को खुसरो ने सुल्तान की हत्या कर दी और नासिरुद्दीन खुसरो शाह के नाम से शासक बना।
- **नासिरुद्दीन खसरो शाह (अप्रैल-सितंबर 1320 ई.)**
- अप्रैल 1320 में खुसरो ने कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी की हत्या कर दी और नासिरुद्दीन खुसरो शाह के नाम से शासक बना। यह कुछ माह तक ही शासक रहा अप्रैल से सितंबर माह तक।
- नासिरुद्दीन खुसरो शाह ने **सूफी संत निजामुद्दीन औलिया** को धन वितरित किया।
- **गाजी मलिक जो दीपालपुर का इक्तेदार था के नेतृत्व में खुसरो शाह को मरवा दिया गया तथा तुगलक वंश की स्थापना की गई।**

तुगलक वंश (1320 से 1414 ई.)

संस्थापक –ग्यासुद्दीन तुगलक

अन्तिम शासक - नासिरुद्दीन महमूद

गाजी ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

उपाधि - अल-शहीद (मुहम्मद-बिन-तुगलक के सिक्कों पर ग्यासुद्दीन की यह उपाधि मिलती है।)

ग्यासुद्दीन तुगलक के समय हुये आक्रमण

- इसके समय 1323 ई. में पुत्र जौना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक)ने वारंगल पर आक्रमण किया लेकिन असफल रहा। इस समय वारंगल का शासक प्रताप रुद्रदेव था।
- **1324 ई. में जौना खाँ ने वारंगल पर पुनः आक्रमण किया इसे (वारंगल) जीतकर इसका नाम तेलंगाना/सुल्तानपुर रखा।**

- ***सिकन्दर लोदी ने मोहरम मनाने पर पाबंदी लगाई। मुस्लिम महिलाओं के मजार दर्शन पर भी पाबंदी लगाई ।*** *सिकन्दर फारसी का ज्ञाता था तथा गुलरुखी उपनाम से फारसी में लिखता था।*
- *इसी के आदेश पर आयुर्वेद के संस्कृत ग्रंथ का फारसी में फरहंग-ए-सिकन्दरी के नाम से अनुवाद किया गया । इसी के काल में फारसी भाषा में संगीत पर लज्जत-ए-सिकन्दरी नाम से ग्रंथ लिखा गया।* ***कबीर इसका समकालीन था।***

इब्राहिम लोदी (1517- 1526 ई.)

- *इब्राहिम लोदी, सिकन्दर लोदी का सबसे छोटा बेटा था। सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी 1517 ई. में राजगद्दी पर बैठा और 1526 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया।* ***वह लोदी राजवंश का अंतिम राजा और दिल्ली सल्तनत का अंतिम सुल्तान था।***
- ***1517-18 ई. में इब्राहीम लोदी खतौंनी (बूंदी) के युद्ध में राणा सांगा से पराजित हुआ।*** *तुजुक-ए-बाबरी (बाबर की आत्मकथा) के अनुसार दौलत खां लोदी आलम खाँ तथा सांगा के दूत बाबर से आगरा पर आक्रमण करने हेतु मिले थे।*

शासनकाल में कार्य

- *वह एक साहसी राजा था उसके शासनकाल में बहुत से विद्रोह हुए।*
- *जौनपुर और अवध मे विद्रोह का नेतृत्व दरिया खान ने किया।*
- *दौलत खान ने पंजाब में विद्रोह किया।*
- *खतौली की लड़ाई 1518 ई. में राणा सांगा के हाथों को पराजित होना पड़ा।*
- *उसके ज़मींदार व चाचा आलम खान काबुल भाग गया और बाबर को भारत पर हमला करने का न्यौता दिया।*
- ***पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल 1526 को बाबर और इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ*** *और इसमें लोदी की हार हुई।*

मृत्यु

- *बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में 21 अप्रैल 1526 को पराजित कर इसे मार डाला और आगरा तथा दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर लिया।*
- ***1526 में पानीपत की लड़ाई के बाद बाबर ने मुगल वंश की नींव रखी जिसने लगभग 300 साल तक भारत पर राज किया । इस तरह दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ।***

सल्तनत काल में इस्तेमाल होने वाले प्रशासनिक और कृषि से जुड़े शब्दों की सूची

प्रशासन और कृषि से जुड़े शब्द	अर्थ
अलाई टंका	अलाउद्दीन खिलजी के टैंक
अलामाथा-ए-सल्तनत	राजसी सत्ता का प्रतीक चिह्न
आमिल	राजस्व अधिकारी
आमिर सेनापति	तीसरा सर्वोच्च आधिकारी
आमिर-ए-दाद	न्याय का प्रभारी अधिकारी
आमिर-ए-अखुर	घोड़ों का निरीक्षक अधिकारी
आमिर-ए-हाजिब	शाही खलिसा अदालत का प्रभारी अधिकारी (जिसे तुर्की में बर्बेक/बारबेक भी कहा जाता है)
आमिर-ए-कोह	कृषि का प्रभारी अधिकारी
अर्ज	सैनिकों की गिनती, उनके उपकरण और घोड़ों का प्रभारी अधिकारी
अर्ज-ए-मुमालिक	सेना का प्रभारी मंत्री
बर्बेक/बारबेक	शाही दरबार का प्रभारी अधिकारी
बरिद	सूचना एकत्र करने के लिए राज्य द्वारा नियुक्त खुफिया अधिकारी
बरिद-ए-मुमालिक	राज्य खुफिया सेवा का प्रमुख
दाबिर	सचिव
दाबिर-ए-मुमालिक	मुख्य सचिव
दाग	घोड़ों पर ब्रांडिंग का निशान
दीवान	कार्यालय : केंद्रीय सचिवालय
दीवान-ए-अर्ज	युद्ध मंत्री का कार्यालय
दीवान-ए-इंशा	मुख्य सचिव का कार्यालय
हुक्म-ए-मुशाहिद	भू-राजस्व का आकलन (केवल निरीक्षण के द्वारा)
इक्तादार	इक्ता का प्रभारी

जागीर	राज्य द्वारा एक सरकारी अधिकारी को दिया गया भूमि का एक टुकड़ा
जीतल	दिल्ली सल्तनत कालीन तांबे के सिक्के
जजिया	गैर - मुसलमानों पर लगाया जाने वाला व्यक्तिगत और वार्षिक कर
कारखाना	शाही कारखाना या उद्योग, यह दो प्रकार के होते थे - रत्बी, जानवरों की देखभाल के लिए और गैर-रत्बी, राज्य द्वारा आवश्यक वस्तुओं के निर्माण के लिए।
खालिसा	सीधे राजा द्वारा नियंत्रित भूमि
खिदमति	सेवा देय राशि
खुत्स	गांव का प्रमुख या राजस्व संग्राहक
मदद-ए-माश	धार्मिक या योग्य व्यक्तियों के लिए भूमि या पेंशन का अनुदान
मजलिस-ए-खास	राजा और उसके उच्च अधिकारियों की एक गुप्त बैठक
मजलिस-ए-खिलावत	राजा और उसके उच्च अधिकारियों की एक गुप्त बैठक
मलिक नायब	पूरे राज्य का शासक या राजा की ओर से कार्य करने के लिए अधिकृत राजा का प्रतिनिधि
मुहतासिब	गांव में कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नियुक्त एक अधिकारी, जो गांव का सबसे वरिष्ठ नागरिक होता था।
मुक्ता	गवर्नर, एक इक्ता या मध्यकालीन प्रांत का प्रभारी
मुस्तौफी-ए-मम्लाकत	पूरे राज्य का लेखाकार (एकाउंटेंट)
मुस्तौफी-ए-मामलिक	पूरे राज्य का लेखा परीक्षक
नायब-ए-अर्ज	युद्ध मंत्री या उसका सहायक
नायब-ए-मम्लाकत	पूरे राज्य का शासक या राजा की ओर से कार्य करने के लिए अधिकृत राजा का प्रतिनिधि
दीवान-ए-रियासत	व्यापार और वाणिज्य मंत्री का कार्यालय
दीवान-ए-मुस्तखराज	कर संग्रह करने के लिए कार्यालय
दोआब	गंगा और यमुना नदी के बीच की भूमि
फ़तवा	सशगनी शरीयत या धार्मिक कानून के अनुसार एक फैसला
फौजदार	सेना का सेनापति
हक्क-ए-शिर्ब	नहर सिंचाई से लाभ
हुक्म-ए-मसाहट	माप के अनुसार भूमि राजस्व का आकलन
चुंगी-ए-गल्ला	अनाज पर कर
आमिर-ए-तारब	मनोरंजन कर
गल्ला बख्शी, कानकूट	भूमि राजस्व संग्रह की व्यवस्था
नायब-ए-मुल्क	साम्राज्य का शासक
काजी-उल-कज्जात	मुख्य काजी
सराई-अदल	कपड़े और अन्य विशिष्ट वस्तुओं की बिक्री के लिए दिल्ली के बाजार को अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा दिया गया नाम
साशगनी	छः जीतल या तांबे के सिक्कों के बराबर एक छोटा चांदी का सिक्का
सहना-ए-मंडी	अनाज के बाजार का प्रभारी अधिकारी
सिपहसलार	सेनापति

गुलाम कालीन वास्तुकला

गुलाम काल में बनी कुछ प्रमुख इमारतों का वर्णन इस प्रकार है। -

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद-

- ।।92 ई. में तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के हारने पर उनके किलें **रायपिथौंरा' पर अधिकार कर वहाँ पर कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया।**
- वस्तुतः कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली विजय के उपलक्ष्य में तथा इस्लाम धर्म को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से ।।92 ई .में कुत्ब' अथवा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण कराया।

कुतुबमीनार

- यह मीनार दिल्ली से ।2 मील की दूरी पर मेहरौली गाँव में स्थित है । प्रारम्भ में इस मस्जिद का प्रयोग अजान के लिए होता था, पर कालान्तर में इसे **'कीर्ति स्तम्भ'** के रूप में जाना जाने लगा। ।206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया।
- ऐबक इस इमारत में चार मंजिलों का निर्माण कराना चाहता था, परन्तु एक मंजिल के निर्माण के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। बाद में इसकी शेष मंजिलों का निर्माण इल्तुतमिश ने ।23। ई. में करवाया।
- कुतुबमीनार का निर्माण 'ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' की स्मृति में कराया गया था।
- **अढ़ाई दिन का झोपड़ा**
- **कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढ़ाई दिन का झोपड़ा, जो वास्तव में एक मस्जिद है। का निर्माण अजमेर में करवाया।**
- इसके नाम के विषय में जॉन मार्शल का कहना है कि, चूंकि इस मस्जिद का निर्माण मात्र ढ़ाई दिन में किया गया था, इसलिए इस मस्जिद को 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' कहा जाता है ।
- **विग्रहराज बीसलदेव ने इस स्थान पर एक सरस्वती मंदिर बनवाया था।** बीसलदेव द्वारा रचित 'हरिकेलि' नामक नाटक तथा रोमदेव कृत 'ललित विग्रहराज' की कुछ पंक्तियां आज भी इसकी दीवारों पर मौजूद है।
- **कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे तुड़वाकर मस्जिद बनवायी।** इस मस्जिद के आकार को कालान्तर में इल्तुतमिश द्वारा विस्तार दिया गया। इस मस्जिद में तीन स्तम्भों का प्रयोग किया गया, जिसके ऊपर 20 फुट ऊँची छत का निर्माण किया गया है ।
- इसमें पाँच मेहराबदार दरवाजे भी बनाये गए हैं । मुख्य दरवाजा सर्वाधिक ऊँचा है । मस्जिद के प्रत्येक कोने में चक्रकार एवं बांसरी के आकार की मीनारें निर्मित हैं ।

नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा या सुल्तानगढ़ी

- स्थापत्य कला के क्षेत्र में इस मकबरे के निर्माण को एक नवीन प्रयोग के रूप में माना जाता है। चूँकि तुर्क सुल्तानों द्वारा भारत में निर्मित यह पहला मकबरा था, इसलिए **इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता कहा जा सकता है ।**

इल्तुतमिश का मकबरा

- इस मकबरे का निर्माण इल्तुतमिश द्वारा कुव्वत मस्जिद के समीप लगभग ।235 ई. में करवाया गया था ।42 फुट वर्गाकार इस इमारत के तीन तरफ पूर्व, दक्षिण एवं उत्तर में प्रवेश द्वार बना है ।
- **30 घन फीट का बना आन्तरिक कक्ष अपनी सुन्दरता के कारण हिन्दू तथा जैन मंदिरों के समकक्ष ठहरता है ।** मकबरे की दीवारों पर कुरान की आयतें खुदी हैं।

सुल्तान बलबन का मकबरा –

- सुल्तान बलबन का मकबरा वास्तुकला की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण रचना है । इस मकबरे का कक्ष वर्गाकार है । **सर्वप्रथम वास्तविक मेहराब का रूप इसी मकबरे में दिखाई देता है ।**

मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह

- इस दरगाह या खानकाह का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था। कालान्तर में अलाउद्दीन खिलजी ने इसे विस्तृत करवाया। बलबन ने रायपिथौंरा किले के समीप स्वयं का मकबरा एवं लाल महल नामक मकान का निर्माण करवाया । **दिल्ली में बना उसका मकबरा शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित है।**

खिलजी कालीन वास्तुकला -

- अलाउद्दीन ने सीरी नामक गाँव में एक नगर की स्थापना की । जियाउद्दीन बरनी ने इस नगर को **'नौ' अथवा 'नया नगर'** कहा।
- इस नगर के बाहर अलाउद्दीन खिलजी ने एक तालाब एवं उसके किनारे कुछ भवनों का निर्माण

करवाया था, आज "हौज-ए-रानी" के नाम से प्रसिद्ध यह स्थान काफी जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है ।

अलाई दरवाजा-

- इसका निर्माण कार्य **अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1310-11 ई. में आरम्भ करवाया गया।** इसके निर्माण का **उद्देश्य कुव्वत मस्जिद में चार प्रवेश द्वार बनाना था** -दो पूर्व में, एक दक्षिण में और एक उत्तर में।
- इसका निर्माण ऊँची कुर्सी पर किया गया है। कुर्सी पर सुन्दर बेल-बूटे बने थे।
- दरवाजे में लाल पत्थर एवं संगमरमर का सुन्दर संयोग दिखता है, साथ ही आकर्षक ढंग से कुरान की आयतों को लिखा गया है। **इस मस्जिद में बनी एक गुम्बद में पहली बार विशुद्ध वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया गया है।** अलाई दरवाजा की साज-सज्जा में बौद्ध तत्वों के मिश्रण का आभास होता है। पहली बार **वास्तविक गुम्बद का स्वरूप अलाई दरवाजा में ही दिखाई देता है ।**

जमात खाँ मस्जिद -

- जमात खाँ मस्जिद का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के समीप करवाया। पूर्णतः इस्लामी शैली में निर्मित इस मस्जिद में लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है। **इसके डाटो के कोने में कमल के पुष्प से इस मस्जिद में हिन्दू शैली के प्रभाव का आभास होता है।** पूर्णरूप से इस्लामी परम्परा में निर्मित यह भारत की पहली मस्जिद है ।
- **खिलजी काल में पूर्णत निर्मित अन्य निर्माण कार्यों में कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी द्वारा भरतपुर में निर्मित 'ऊखा मस्जिद' एवं खिज्र खाँ द्वारा निर्मित निजामुद्दीन औलिया की दरगाह विशेष उल्लेखनीय हैं।**

इस काल की प्रमुख इमारतें निम्नलिखित हैं-

तुगलकाबाद -

- ग्यासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर **तुगलकाबाद नाम का एक नया नगर स्थापित किया । रोमन शैली में निर्मित इस नगर में एक दुर्ग का निर्माण भी हुआ है।**
- इस दुर्ग को 'छप्पन कोट' के नाम से भी जाना जाता है ।
- दुर्ग की दीवारें मिस्र के पिरामिड की तरह अन्दर की ओर झुकी हुई हैं । इसकी नींव गहरी तथा दीवारें मोटी हैं ।

ग्यासुद्दीन का मकबरा

- यह मकबरा चतुर्भुज के आकार के आधार पर स्थित है, मकबरे की ऊँचाई लगभग 80 फीट है। मकबरे में ऊपर संगमरमर का सुन्दर गुम्बद बना है, गुम्बद की छत कई डाटों पर आधारित है। मकबरे में आमलक और कलश का प्रयोग हिन्दू मंदिरों की शैली पर किया गया है।
- **लाल पत्थर से निर्मित** इस मकबरे के चारों ओर मजबूत मीनार का निर्माण किया गया है । कृत्रिम झील के अन्दर निर्मित इस मकबरे की दीवारें चौड़ी एवं मिस्र के पिरामिडों की तरह भीतर की ओर झुकी हैं ।

जहाँपनाह नगर

- मुहम्मद तुगलक ने इस नगर की स्थापना रायपिथौरा एवं सीरी के मध्य करवाई थी। **इस नगर के अवशेषों में 'सतपुत्र' अर्थात् सात मेहराबों का पुत्र आज भी वर्तमान में है ।**
- अवशेष के रूप में बचा 'विजय मंडल' सम्भवतः महल का एक भाग था।

कोटला फिरोजशाह

- सुल्तान फिरोज शाह तुगलक ने पाँचवी दिल्ली बसायी, जिसमें एक महल की स्थापना की । यह कोटला फिरोजशाह के नाम से विख्यात है।
- सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला फिरोजशाह दुर्ग का निर्माण करवाया।
- दुर्ग के अन्दर निर्मित जामा मस्जिद के सामने सम्राट अशोक का टोपरा गाँव से लाया गया स्तम्भ गड़ा है। **मेरठ से लाया गया अशोक का दूसरा स्तम्भ 'कुश्क-ए-शिकार' महल के सामने गड़ा है।**
- इसके साथ ही दुर्ग के अन्दर एक दो मंजिली इमारत के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिसका उपयोग विद्यालय के रूप में किया जाता था।

फिरोजशाह का मकबरा

यह मकबरा एक वर्गाकार इमारत है। मकबरे की दीवारों को फूल-पत्तियों एवं बेल-बूटों से सजाया गया है। मकबरे में संगमरमर का भी प्रयोग किया गया है।

अध्याय – 2

मराठा साम्राज्य

- मराठा शब्द की उत्पत्ति राठा शब्द से हुई है।
- महाराष्ट्र में इनकी शक्ति का उदय हुआ।
- **दक्षिण-पश्चिम भारत का वह भाग जो पश्चिम में अरब सागर से लेकर उत्तर में सतपुडा पर्वत तक फैला हुआ है और जिसमें बम्बई, कोंकर्ण, बरार, मध्य भारत का कुछ भाग और हैदराबाद राज्य का एक तिहाई भाग सम्मिलित है, मराठा बाड़ा के नाम से जाना जाता था।**
- **ग्रांड टफ के अनुसार, "मराठों का उदय आकस्मिक अग्निकांड की भाति हुआ।"**

शिवाजी (1627-1680 ई.)

- शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल 1627 ई. की शिवनेर के पहाड़ी दुर्ग (पूना) में हुआ था।
- इनके **पिता का नाम शाह जी भोंसले और माता का नाम जीजाबाई था।**
- शिवाजी के **गुरु समर्थ गुरु रामदास थे।**
- शिवाजी के संरक्षक दादाजी कोंण्डदेव थे।
- शिवाजी का प्रथम राज्याभिषेक 16 जून 1674 को (रायगढ़) में हुआ था।
- श्री गंगा भट्ट द्वारा हुआ था।
- शिवाजी का द्वितीय राज्याभिषेक 24 सितम्बर 1674 ई. को तांत्रिक विधि से कांची के निश्चलपुरी गोस्वामी तांत्रिक द्वारा कराया गया।
- **छत्रपति, हिन्दू धर्मोधारक, राजा शिवाजी की उपाधियां थी।**

शिवाजी की प्रारम्भिक विजय

- सर्वप्रथम शिवाजी ने 1646 ई. में तोरण दुर्ग को जीता।
- शिवाजी की दूसरी विजय 1646 ई. में ही मुरम्बगढ़ किले की थी।
- इसके बाद शिवाजी ने 1654 ई. में पुरंदर का किला जीता।
- 1656 ई. में शिवाजी ने जावली एवं रायगढ़ पर अधिकार किया।
- **1657 ई. में पहली बार शिवाजी का मुकाबला मुगलों से हुआ।**
- 1657 ई. में शिवाजी ने, कोंकण प्रदेश के कल्याण, भिवण्डी एवं माहुल के किलों को जीता।

अफजल खाँ की हत्या

- बीजापुर के सुल्तान ने 1659 ई. में अपने प्रधान सेनापति अफजल को शिवाजी के विरुद्ध भेजा।
- भरे दरबार में अफजल खाँ ने कहा कि, "अपने घोड़े से बिना उतरे ही उस पहाड़ी चूहे को बन्दी बना लूँगा।"
- शिवाजी के दो अंगरक्षक जीवमहल और सम्भूजी कावजी थे।
- शिवाजी ने 1659 ई. में ही अफजल खाँ की हत्या कर दी।
- 1659 ई. में औरंगजेब ने शिवाजी को समाप्त करने के लिए 'शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया परन्तु 1663 ई. में शिवाजी ने रात में पूना के महल पर आक्रमण किया और शाइस्ता-खाँ भाग गया।

सूरत की प्रथम लूट

- **शाइस्ता खाँ को हराने के बाद शिवाजी ने 1664 ई. में सूरत बंदरगाह को लुटा।**
- **शिवाजी ने सेठ साहूकारों को लूटा किन्तु अंग्रेजों एवं डचों की कोठियों को कोई हानि नहीं पहुँचायी।**
- इस लूट में शिवाजी को एक करोड़ से अधिक धनराशि मिली।

पुरन्दर की संधि (1665 ई.)

- शाइस्ता खाँ की असफलता और सूरत की लूट से त्रस्त होकर औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए आमेर के राजा जयसिंह को भेजा।
- **जयसिंह के साथ युद्ध में शिवाजी की हार हुई तथा शिवाजी ने 22 जून 1665 ई. को 'पुरन्दर की सन्धि' कर ली।**
- इस संधि के तहत शिवाजी ने 23 किले मुगलों को दे दिये और 12 किले अपने पास रखे।
- शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुग़ल सम्राट की सहायता देने का वचन दिया।
- 1666 ई. में राजा जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा आये परन्तु उचित सम्मान न मिलने पर वे उठकर चल दिये। इससे नाराज होकर औरंगजेब ने शिवाजी को जयपुर भवन (आगरा) में कैद कर के रखा।
- औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान की थी।

अध्याय – 4
1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह

राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन

फकीर विद्रोह (1776–77)

- **यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।** इस विद्रोह के नेता मजनू शाह ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देते हुए जमींदारों और किसानों से धन इक्कठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। पठानों राजपूतों और सेना से निकाले गये भारतीय सैनिकों ने उनकि मदद की।
- **देवी चौधरानी और भवानी पाठक इस आंदोलन से जुड़े प्रसिद्ध हिन्दू नेता थे।**

सन्यासी विद्रोह (1770 – 1820)

- **संन्यासी विद्रोह भारत की आज़ादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया।** एक प्रबल विद्रोह था। संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- **इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।**
- बंगाल में अंग्रेज़ी हुकूमत के क़ायम होने पर जमींदार, कृषक, शिल्पकार सभी की स्थिति बदत्तर हो गई थी।
- इसके अलावा बंगाल का 1770 ई. का भयानक अकाल तथा अंग्रेज़ी सरकार द्वारा इसके प्रति बरती गई उदासीनता इस विद्रोह का प्रमुख कारण थी।
- भारतीय जनता के तीर्थ स्थानों पर जाने पर लगे प्रतिबन्ध ने शान्त संन्यासियों को भी विद्रोह पर उतारू कर दिया। इन सभी तत्वों (जमींदार, कृषक, शिल्पी व संन्यासियों) ने मिलकर अंग्रेज़ी सरकार का विरोध किया।
- इस विद्रोह को कुचलने के लिए वारेन हेस्टिंग्स को कठोर कार्रवाई करनी पड़ी थी।

पागलपंथी विद्रोह

- उत्तर-पूर्वी भारत में प्रभावी **पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था। उत्तर-पर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।**
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इसके परिणामस्वरूप **1825 ई. में पागलपंथियों के नेता टीपू ने विद्रोह कर दिया।** यह विद्रोह लगभग दो दशकों तक चला। इस विद्रोह के दौरान टीपू इतना प्रभावशाली हो गया की उसने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में औपनिवेशक प्रशासन के समान्तर एक ओर प्रशासनिक तंत्र का गठन कर लिया। इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1830 – 70)

- वहाबी आंदोलन **मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था।** जिसने **कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुरूतियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।**
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाबी के नाम पर इसका नाम वहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की। इस आंदोलन के तहत सैयद अहमद ने सन 1830 में पेशावर पर नियंत्रण कर लिया और अपने नाम के सिक्के चलवाए। किन्तु 1831 में बालाकोट के युद्ध में इनकी मृत्यु हो गई।
- सैयद अहमद की अचानक मृत्यु के बाद वहाबी आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना हो गया इस आंदोलन की अनेक कमजोरियां थी जैसे साम्प्रदायिक उन्माद तथा धर्मांधता इसके बावजूद वहाबीयों ने हिन्दुओं का विरोध कभी नहीं किया।
- वहाबी आंदोलन भारत को अंग्रजों से मुक्त करना चाहता था। परन्तु **इस आंदोलन का उद्देश्य भारत के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं बल्कि मुस्लिम शासन की पुनस्थापना करना था।** 1870 के आस-पास अंग्रेजों ने इस आंदोलन का दमन कर दिया।

कूका विद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी। वहाबी विद्रोह की भांति 'कूका विद्रोह' का भी आरम्भिक स्वरूप धार्मिक था, किन्तु बाद में यह राजनीतिक विद्रोह के रूप में परिवर्तित हो गया।
- इसका सामान्य उद्देश्य अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालना था।

जनजातीय आंदोलन का स्वरूप

- सभी जनजातीय अथवा आदिवासी आंदोलनों की प्रष्ठ भूमि एकसमान थी। किन्तु इन आं**दोलनों के समय तथा इनके द्वारा उठाये मुद्दों में पर्याप्त भिन्नता थी।**
- कुँवर सुरेश सिंह ने इन आंदोलनों को तीन चरणों में विभाजित किया है।
- **प्रथम चरण** – 1795 से 1820 के बीच था। इस समय **अंग्रेजी शासन व्यवस्था युवावस्था की और बढ़ रही थी।**
- **दूसरा चरण** – दूसरा चरण 1860 से 1920 तक रहा। इस चरण के दौरान **आदिवासी आंदोलनों की प्रवृत्ति अलगाववादी आंदोलनों की बजाय राष्ट्रवादी तथा कृषक आंदोलनों में भाग लेने की रही।** इसके अलावा दोनों चरणों में भिन्नता रही थी।

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)

- यह छोटा नागपुर एवं सिंह भूमि जिला से अंग्रेजों द्वारा मुंडा एवं हो जनजातियों को उनकी भूमि से बेदखल किए जाने से इस विद्रोह की नींव पड़ी हो जनजाति ने 1820 22 ईस्वी तक और 1831 ईस्वी में अंग्रेजी सेना का विद्रोह किया।
- राजा जगन्नाथ जो बंगाल के पाराहार के तत्कालीन राजा थे, उन्होंने आदिवासियों की इस विद्रोह में भरपूर सहायता की मेजर रफ सेज कठोर कार्यवाही से इस विद्रोह का दमन कर दिया 18 से 74 में मुंडा विद्रोह शुरू हुआ, तथा 18 से 95 ईस्वी में बिरसा मुंडा द्वारा इस विद्रोह का नेतृत्व संभालने पर यह विद्रोह शक्तिशाली रूप से सामने आया।
- इन्होंने 18 से 99 ईस्वी. में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इस विद्रोह की उद्घोषणा की जो सन् उन्नीस सौ में पूरे मुंडा क्षेत्र में आग की तरह फैल गया। सन् उन्नीस सौ में अंग्रेजों द्वारा बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया। जहां राँची की जेल में हैजे से बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ **इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख सम्प्रदाय के किसानों को दे दी।**
- इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला।

संथाल विद्रोह (1855)

- **सन् 1855 ईस्वी में जमींदार और साहूकारों के अत्याचार और भूमि कर अधिकारियों के दमनात्मक व्यवहार के प्रति सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में राजमहल एवं भागलपुर के संस्थान आदिवासियों ने विद्रोह कर दिया।**
- जिसके फलस्वरूप विद्रोहियों ने संथाल परगना गठित करने की मांग की और अपनी सशक्त प्रकृति के कारण विद्रोह वीर भूमि सिंह भूमि बांकुरा हजारीबाग मुंगेर तथा भागलपुर जिलों में फैल गया।
- सन् 1855 से 56 ईस्वी में ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक सैनिक कार्यवाही द्वारा संथाल विद्रोह को कुचल दिया गया तथा **इस क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने विद्रोहियों की पृथक संथाल परगना गठित करने की मांग को स्वीकार कर लिया**

चुआर विद्रोह (1798)

दुर्जन सिंह तथा जगन्नाथ के नेतृत्व में बंगाल के मिदनापुर (मेदिनीपुर) जिले में 1798 ईस्वी में यह विद्रोह हुआ इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि कर एवं अकाल के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट था इस विद्रोह में आत्म विनाश की नीति अपनाते हुए श्री कैला पाल दल भूमि बाराभूम एवं ढोल का के शासकों और चुआर के आदिवासियों ने योगदान दिया यह विद्रोह रुक रुक कर 30 वर्षों तक चला।

खासी विद्रोह

- **भारत के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में जब अंग्रेजों ने खासी की पहाड़ियों से लेकर सिलहट के बीच सड़क मार्ग बनाना प्रारंभ किया तो स्थानीय लोगों ने इसे ब्रिटिश राज्य का उनकी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप मानते हुए विद्रोह किया** और स्थानीय खम्पाटी तथा सिंहपो लोगों ने राजा तीरथ सिंह के नेतृत्व में आंदोलन किया।
- इस आंदोलन में श्री वीर मानिक और मुकुंद सिंह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई खासी विद्रोह 1833 ईस्वी तक कठोर सैन्य कार्यवाही द्वारा कुचल दिया गया

अहोम आदिवासी विद्रोह (1828)

- यह **ब्रिटिश सरकार ने 1828 ईस्वी में असम राज्य के अहोम प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने**

का प्रयत्न किया तो अहोम आदिवासियों ने गोमधर कुंवर के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

- उस समय इस विद्रोह को सैन्य कार्यवाही द्वारा दमन पूर्वक नीति से कुचल दिया गया परंतु 1830 ईस्वी में पुणे विद्रोह को देखते हुए अंग्रेजों ने असम के राजा पुरंदर सिंह को असम के प्रदेश अहोम विद्रोह को शांत किया

फरायजी विद्रोह (1838)

- बंगाल के फरीदपुर नामक स्थान पर फरायजी सम्प्रदाय के अनुमोदन पर शरीयातुल्ला ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया और शरीयातुल्ला के पुत्र दादू मियां ने अंग्रेजों को बंगाल से बाहर खदेड़ने के लिए तथा जमीदारों के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए 1838 ईस्वी में इस विद्रोह किया।
- **यह विद्रोह अट्ठारह सौं सत्तावन ईस्वी तक चला** परंतु किसी सक्रिय नेता के अभाव में इस आंदोलन ने दम तोड़ दिया और इस आंदोलन के लोग बहावी आंदोलन से जुड़ गए

पश्चिम भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह

भील विद्रोह (1818)

- **1818 में भील विद्रोह का प्रारंभ हुआ यह भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ इस विद्रोह का मुख्य कारण कृषि से संबंधित परेशानियां और अंग्रेजों द्वारा लगाए जाने वाले टैक्स थे** 1825 ईस्वी में सेवाराम के नेतृत्व में भीलों ने पुनः विद्रोह किया।
- 1846 ई. तक भील विद्रोह चलता रहा, भील विद्रोह को भड़काने का आरोप ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पेशवा बाजीराव द्वितीय और त्र्यंबक जी पर लगा दिया।

बघेरा विद्रोह

- यह विद्रोह ओखा मंडल के बघेरा लोगों द्वारा सन् 1818 से 1819 ई. तक बड़ौदा के गायकवाड़ राजा द्वारा किया गया।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण जमींदारों द्वारा अंग्रेजों की सहायता से ज्यादा कर वसूली करना था** और 1820 ईस्वी में एक सैन्य कार्यवाही द्वारा बघेरा विद्रोह का भी दमन कर दिया गया।

किट्टूर विद्रोह

किट्टूर के स्थानीय शासक की विधवा रानी चेन्नमा ने किया क्योंकि अंग्रेजों ने राजा के दत्तक पुत्र को मान्यता नहीं दी यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाही द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया यह विद्रोह 1824 से 1829 ईस्वी तक चला

कच्छ विद्रोह (1819)

- **कच्छ के राजा भारमल को अंग्रेजों द्वारा शासन से बेदखल करना कच्छ विद्रोह का मुख्य कारण था।**
- अंग्रेजों ने कच्छ के अल्प वयस्क पुत्र को वहां का शासक बना दिया और भू-कर में वृद्धि कर दी इसके विरोध स्वरूप भारमल और उसके समर्थकों ने 1819 में यह विद्रोह शुरू कर दिया

भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह

पॉलीगार विद्रोह 1801

तमिलनाडु में नई भूमि व्यवस्था लागू करने के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सन 1801 ईस्वी में वहां के स्थानीय पॉली वालों ने वीपी कट्टा बामन्नान के नेतृत्व में विद्रोह किया गया और यह विद्रोह 1856 ईस्वी तक चला।

पाइक विद्रोह (1817)

मध्य उड़ीसा में पाइक जनजाति द्वारा सन् 1817 ईस्वी से 1825 ईस्वी तक यह विद्रोह किया इस विद्रोह के नेतृत्व कर्ता बख्शीजग बंधु ने किया

सूरत का नमक विद्रोह (1817)

अंग्रेजों द्वारा **नमक के कर में 50 पैसे की वृद्धि** करने पर इसका विरोध करने के लिए 1844 ईस्वी में सूरत के स्थानीय लोगों ने यह विद्रोह किया इस **विद्रोह के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने बढ़ाए नमक करों को वापस ले लिया।**

नागा विद्रोह (1931)

- नागा विद्रोह रोगमइ जदोनांग के नेतृत्व में भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में हुआ। नाग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य नागा राज्य की स्थापना करके प्राचीन धर्म को स्थापित करना था।
- अंग्रेजों ने नेता जदोनांग को गिरफ्तार करके 29 अगस्त 1931 को फांसी पर लटका दिया।
- इसके बाद में इस **आंदोलन की बागडोर एक नागा महिला गाँडिनल्यू ने अपने हाथों में ले ली इन्होंने नागा आंदोलन को गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से जोड़कर इस आंदोलन को विस्तारित किया।**
- गाँडिनल्यू ने पूर्व नेता जदोनांग के विचारों से प्रेरित होकर एक होर्का पंथ की स्थापना की।

अध्याय – 5
1857 ई. की क्रांति

- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी ।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है । तो कुछ ने इसे दो धर्मो अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है ।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी ।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी ।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्त्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये ।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया ।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया । उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

(2) मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया ।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।**

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के संबंध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे ।

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असंतोष :-

(4) भूमि का अपहरण :-

- **बैन्टिक ने कर मुक्त भूमि का अपहरण किया,** जिसके कारण कुलीन वर्ग के लोगों को अपनी जीविकोपार्जन के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी। काम ये कर नहीं सकते थे, भीख मांगने में इन्हें शर्म आती थी ।
- उच्च वर्ग की प्रतिष्ठा और मर्यादा को जबरदस्त धक्का लगा । मजबूरी में उन्होंने भी सिपाहियों के विद्रोह का समर्थन किया और उसमें शामिल हो गये।
- भू-राजस्व व्यवस्था ने अधिकांस अभिजात वर्गों को निर्धन बना दिया । कम्पनी की अलग अलग भू-राजस्व व्यवस्थाओं यथा स्थायी बंदोबस्त रैयतवाडी व्यवस्था और महालवाडी द्वारा किसानों का जबरदस्त शोषण किया गया जिससे वे निर्धनता के शिकार हो गये ।
- नई व्यवस्था द्वारा कई बड़े किसानों से उनके पद और जमीने छीन ली गई । अंग्रेजों की इस व्यवस्था ने किसानों की निर्धन बना दिया तथा किसानों को ऋण के दुश्चक्र में फंसा दिया । आदि कारणों ने लोंगो में असंतोष पैदा किया जिसने 1857 की क्रांति में अहम भूमिका निभाई ।

(5) शिल्पकारों और दस्तकारों के दमन से उत्पन्न असंतोष :-

- ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन ने भारतीय दस्तकारी और शिल्प के प्रति उपेक्षा का रवैया अपनाया । जो थोड़ी बहुत छूट दी गई वह भी इसलिए कि भारतीय दस्तकार वही बनाएं जो अंग्रेज चाहते हैं ।
- पूरी दुनिया में अपनी कला के लिए मशहूर भारतीय दस्तकार और शिल्पकार भूखे मरने लगे । उन्होंने रोजगार की तलाश की, लेकिन रोजगार उन्हें नहीं मिला । क्योंकि जिस तेजी के साथ दस्तकारी ख़त्म हुई उस तेजी के साथ औद्योगिक विकास नहीं हुआ ।
- बेकार कारीगरों ने कृषि पर निर्भर होने का प्रयास किया । किन्तु भूमि सीमित होने के कारण उन्हें कृषि से कोई लाभ नहीं हुआ । इस प्रकार विदेशी प्रतिद्वंदी के फलस्वरूप श्रमिक बेकारी का शिकार बन गया और भूमि पर बेकार का बोझ बन गया और समाज के लिए शाश्वत आर्थिक अभिशाप बन गया ।

(6) बेकारी की समस्या :-

- देशी राज्यों के अंग्रेजी राज्यों में विलय होने के फलस्वरूप हजारों सैनिक तथा असैनिक बेकार तथा जीविकाहीन हो गये थे । 1857 ई. के विद्रोह की पृष्ठ भूमि में सैनिक कारण मौजूद थे । अंग्रेजी सेना में अधिकांश भारतीय जवान सैनिक थे और सूबेदार से ऊपर किसी भी पद पर तैनात नहीं थे ।
- उच्च पदों से वंचित व न्यून वेतन की मात्रा थी । जिन्होंने भारतीय असंतोष को बढ़ावा दिया अंग्रेजों ने 1854 में डाकघर अधिनियम पारित कर सैनिकों को प्राप्त निःशुल्क डाक सुविधा भी समाप्त कर दी। इन बेरोजगारों की संख्या लाखों में थी ।
- बेरोजगारों में अंग्रेजों के खिलाफ असंतोष उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था । उन्होंने घूम-घूम कर अंग्रेजों के विरुद्ध प्रचार किया तथा जनता को विद्रोह के लिए प्रोत्साहित किया।

सामाजिक कारण

(1) विदेशी सभ्यता का प्रचार :- अंग्रेज अपने साम्राज्य विस्तार के साथ-साथ अपनी सभ्यता तथा संस्कृति के प्रसार का प्रयास कर रहे थे । इससे भारतीय जनता अत्यंत नाराज और असन्तुष्ट थी ।

(2) भारतीयों के सामाजिक क्रियाकलापों में हस्तक्षेप से उत्पन्न असंतोष :-

- अंग्रेजों ने भारतीय समाज के दोषों को भी दूर करने का प्रयत्न किया। **लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828-35 ई.) ने एक कानून बनाकर सती प्रथा को बन्द कर दिया ।** कन्या वध और बाल विवाह का भी निषेध किया गया ।
- **लॉर्ड कैनिंग ने विधवा-विवाह की आज्ञा दे दी । लॉर्ड डलहौजी ने 1856 ई. में पैतृक सम्पत्ति संबंधी कानून बनाया जिसके द्वारा हिन्दू उत्तराधिकार नियम में परिवर्तन कर** दिया गया।
- इस कानून के अनुसार यह निश्चित किया गया कि यदि कोई हिन्दू ईसाई धर्म ग्रहण कर लेगा, तो उस व्यक्ति को उसकी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा अर्थात् ईसाई बनने वाले हिन्दू व्यक्ति का अपनी पैतृक सम्पत्ति में भाग बना रहेगा।
- रूढ़िवादी भारतीयों के लिए अपने परम्परागत सामाजिक नियम में अंग्रेजों का हस्तक्षेप असहनीय था । अत : उन्होंने विद्रोह को शुरू करने में योगदान दिया ।

(3) वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रयोग :- लॉर्ड डलहौजी ने रेल, डाक, तार आदि का प्रयोग

भारत में शुरू किया था | इन वैज्ञानिक प्रयोगों से भी भारतीय अत्यन्त शंकित हुए | उन्होंने यह समझा कि हमें यूरोपियन बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

(4) अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार :-

- अंग्रेजों ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार बहुत तेजी से शुरू किया था । मैकाले व अन्य अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं साहित्य तथा विधाओं के विरुद्ध जो भाषण दिया था उससे भारतीय बहुत शंकित हो गये और उन्हें यह विश्वास हो गया था कि अंग्रेज उनकी सभ्यता तथा संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं तथा भारतीय नवयुवकों को अंग्रेजी की शिक्षा देकर उनका यूरोपीयकरण करना चाहते हैं |
- नई शिक्षा प्रणाली के अनुसार जो स्कूल खोले गये, उनमें सभी जाति तथा धर्मों के विद्यार्थी एक साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे । यह भारतीय परम्परा के विरुद्ध था । इससे असंतोष की भावना उत्पन्न हुई।

(5) अंग्रेजों की जातीय विभेद की नीति :-

- सामाजिक दृष्टि से अंग्रेज अपने को उच्च नस्ल का मानकर भारतीयों को बहुत निम्न दृष्टि से देखते थे । भारतीयों के प्रति उनका व्यवहार और उनके विचार बहुत ही अपमानजनक हुआ करते थे । ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं, जिनसे इस बात की पुष्टि होती है कि अंग्रेज भारतीयों को बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहते थे ।
- ब्रिटिश जज भी अंग्रेजों के प्रति पक्षपात करते थे । इसलिए, अंग्रेजों के अपमानजनक दुर्व्यवहार के विरुद्ध भारतीय न्याय भी नहीं पा सकते थे ।
- समय के साथ-साथ अंग्रेजों के व्यक्तिगत अत्याचार की घटनाएं कम होने के बजाय बढ़ती जा रही थी । ये घटनाएं भारतीयों में असंतोष का एक मुख्य कारण थी ।

धार्मिक कारण

- कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म के प्रचार का भागीरथ प्रसार किया ।
- जिससे भारतीय जनता विशेषकर सैनिकों में आतंक छा गया । अंग्रेजों द्वारा भारतीय धर्म में हस्तक्षेप के निम्नलिखित प्रयास किये गए –

(1) ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रसार की स्वीकृति देना :-

- **1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा अंग्रेजी सरकार ने ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार की स्वीकृति प्रदान कर दी थी ।**
- उसके बाद ईसाई पादरी बड़ी संख्याओं में भारत आने लगे | उनका एक मात्र लक्ष्य भारत में ईसाई धर्म का प्रसार था । शुरू में अंग्रेज शासकों ने पादरियों को धर्म-प्रचार में कोई सहायता देना पसंद नहीं किया |
- लेकिन बाद में शासक वर्ग द्वारा ईसाई धर्म प्रचारकों को आर्थिक सहायता, राजकीय संरक्षण तथा प्रोत्साहन दिया जाने लगा । इस कारण हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही अपने-अपने धर्म के लिए खतरा महसूस हुआ।

(2) मिशनरियों की उद्दण्डता :-

- ईसाई धर्मोपदेशक बडे अहंकारी तथा उद्दण्ड होते थे। वे भारतीयों के सामने खुले रूप से इस्लाम तथा हिन्दू धर्मों की निन्दा किया करते थे और उनके महापुरुषों, अवतारों और पैगम्बरों को गालियां दिया करते थे ।
- ऐसी स्थिति में हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों को शंका होने लगी और वे अंग्रेजों से घृणा करने लगे।

(3) शिक्षण संस्थाओं द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार :-

- धर्म के लिए सबसे बड़ा खतरा ईसाई पादरियों द्वारा संचालित स्कूलों से हुआ | **इन स्कूलों का उद्देश्य भारतीयों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ, ईसाई धर्म का प्रचार करना भी था ।**
- इन स्कूलों में हिन्दू बच्चों से ईसाई धर्म के संबंध में प्रश्न पूछे जाते थे । इससे उच्च वर्ग के भारतीयों की यह धारणा हो गई कि यदि उनके पुत्र नहीं तो उनके पौत्र तो निश्चय ही ईसाई बन जायेंगे |
- इसके विपरीत **सरकारी स्कूलों में हिन्दू अपने धर्म की शिक्षा नहीं दे सकते थे क्योंकि राज्य अपने को धर्म-निरपेक्ष बतलाता था ।** राज्य की इस दोहरी नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला ।

(4) ईसाई बनने वालों को सुविधाएं देना :-

- ईसाई धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन दिए जाते थे | जो हिन्दु अथवा मुसलमान ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे उन्हें सरकार अनेक प्रकार से सहायता देती थी और सरकारी नौकरियां देकर अन्य लोगों को भी ईसाई बनाने के लिए प्रोत्साहित करती थी ।

- लेकिन इसको व्यवहार में लागू नहीं किया गया, क्योंकि ब्रिटिश शासकों को अब भारतीयों पर कोई विश्वास नहीं रहा था ।

(8) <u>जातीय कटुता</u> :-

- विद्रोह के बाद जातीय कटुता की भावनाएं बहुत उग्र हो गयी। अंग्रेज भारतीयों को अपना शत्रु समझने लगे ।
- अंग्रेज घृणा के भाव से भारतीयों को 'काले भारतीय' कहकर पुकारने लगे । दोनों जातियों के बीच फिर कभी सद्भावना का संचार न हो सका।

(9) <u>भारतीयों के समाजिक जीवन में हस्तक्षेप न करने की नीति</u> :-

- ब्रिटिश शासन ने यह अनुभव किया कि विद्रोह का एक कारण डलहौजी द्वारा हिन्दू समाज में सुधार हेतु बनाए गये कानून भी थे ।
- अतः अब शासन द्वारा भारतीयों के सामाजिक जीवन-और धार्मिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करने के स्थान पर परम्परागत व्यवस्था को बनाए रखने की नीति अपना ली गई।

(10) <u>पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार</u> :- अंग्रेज भारत पर राजनीतिक आधिपत्य बनाए रखने के साथ-साथ बौद्धिक और मानसिक विजय भी पाना चाहते थे । अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने निम्न तरीके अपनाएं –

(1) **1858 ई. में भारत में विश्वविद्यालय स्थापित किए गए,** ताकि यहाँ पश्चिमी शिक्षा का ज्यादा प्रसार हो सके ।

(2) **1861 ई. में 'हाईकोर्ट अधिनियम' पारित किया** गया, ताकि अंग्रेजी न्याय व्यवस्था भारत में लोकप्रिय हो सके ।

(3) 1861 ई. में परिषदों का भी निर्माण किया गया, ताकि भारतीय जनता ब्रिटिश शासन पद्धति से परिचित हो सके ।

(11) हिन्दुओं तथा मुसलमानों में अविश्वास की भावना का बीजारोपण :-

- 1857 ई. विद्रोह में हिन्दुओं और मुसलमानों ने मिलजुलकर भाग लिया था । अतः **क्रांति के दमन के बाद ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच फूट डालने की नीति अपनाई।**
- इसके अन्तर्गत अंग्रेजों ने हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों का दमन अधिक नृशंसता व पार्शविकता के साथ किया । इससे मुसलमान हिन्दुओं के प्रति शिकायत रखने लगे ।
- दोनों जातियों में वैमनस्य की उत्पत्ति हुई । जो भावी राष्ट्रीय आंदोलन के मार्ग में बाधक सिद्ध हुई और जिसका अन्तिम परिणाम देश विभाजन के रूप में सामने आया ।

(12) <u>मुसलमानों की सांस्कृतिक जागृति पर प्रहार</u>:-

- विद्रोह में पहले दिल्ली में मुस्लिम साहित्य तथा संस्कृति का तेजी से विकास हो रहा था लेकिन क्रांति ने उसकी उन्नति और जागृति पर घातक प्रहार किया।

(13) अंग्रेजों की प्रतिष्ठा की स्थापना :-1857 ई. के विद्रोह के सफलता पूर्वक दमन ने अंग्रेजों की उस प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित कर दिया जो क्रीमिया के युद्ध में खो चुकी थी । उनकी सैनिक शक्ति की प्रतिष्ठा भी पहले की तरह बन गई।

(14) <u>आर्थिक प्रभाव</u> :-

- 1857 ई. के विद्रोह के परिणाम भारतीय आर्थिक क्षेत्र के लिए भी नकारात्मक रहे । ब्रिटिश सरकार ने अंग्रेज पूंजीपतियों को भारत में कारखाने खोलने हेतु प्रोत्साहित किया तथा उनकी सुरक्षा का भी प्रबन्ध किया गया ।
- **तम्बाकू जूट, काफी, कपास एवं चाय आदि का व्यापार ब्रिटिश सरकार ने अपने नियंत्रण में ले लिया । भारत से बना माल इंग्लैण्ड भेजा जाता था और वहां से मशीनों से निर्मित माल भारत में आता था,** जो कुटीर उद्योग-धन्धों के निर्मित माल से सस्ता होता था। इसके **परिणामस्वरूप भारतीय कुटीर उद्योग-धंधों का पतन हो गया ।**
- इस प्रकार भारतीय इतिहास में 1857 ई. के विद्रोह का बहुत बड़ा महत्त्व हैं । यह विदेशी शासन से राष्ट्र को मुक्त कराने की देश भक्तिपूर्ण कोशिश और प्रगतिशील कार्यवाही थी । विफल होने के बावजूद यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता का प्रेरणा स्त्रोत बन गया, जिसने भारत को स्वतंत्रता दिलाई ।

13. भारतीय परंपरा में ऋण की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
14. भारत में थियोसोफिकल सोसायटी की विचारधारा के विकास में थियोसोफिष्ट के विचारों की संक्षेप में विवेचना कीजिए।
15. बीसवीं शताब्दी में भारतीय क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।
16. महात्मा गांधी के आगमन ने भारतीय आंदोलन को किस प्रकार एक जन आंदोलन बना दिया?
17. भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानंद का विशिष्ट योगदान क्या था?
18. प्रबोधन युग ने यूरोप के इतिहास की धारा को किस प्रकार प्रभावित किया?
19. प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य पर निबंध लिखिए।
20. भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी कारणों की विवेचना कीजिए।

मध्य प्रदेश का इतिहास

अध्याय – 1

मध्य प्रदेश के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रमुख राजवंश

मध्य प्रदेश का इतिहास :-

ऐतिहासिक स्रोत - (Historical Sources) ऐतिहासिक स्रोतों की दृष्टि से मध्य प्रदेश को तीन भागों में बांटा जाता है।

(1). प्रागैतिहासिक काल - जिसका लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है।

(2). आद्यय ऐतिहासिक काल - जिसके लिखित विवरण को नहीं पढ़ा जा सका है।

ऐतिहासिक काल - जिसके लिखित विवरण को पढ़ा जा सका है।

(1). प्रागैतिहासिक काल –

- मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों में किए गए उत्खनन और खोजो में पूरा प्रागैतिहासिक सभ्यता के चिन्ह मिले हैं।
- आदिम प्रजातियां नदियों के किनारे और कन्दराओ में रहती थी।
- मध्यप्रदेश के भोपाल, रायसेन, छनेरा, नेयावर, भोजवाडी, महेश्वर, देहगांव, बरखेड़ा हण्डिया, कबरा, सिंघनपुर तथा होशंगाबाद इत्यादि स्थानों पर आदिम प्रजातियों के रहने के प्रमाण मिले हैं।
- होशंगाबाद जिले की गुफाओं, रायसेन जिले की भीमबेटका की कंदराओं तथा सागर के निकट पहाड़ियों से प्रागैतिहासिक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।

प्रागैतिहासिक काल को तीन कालो में विभाजित किया जाता है -

1. **पाषाण काल**
2. **मध्य पाषाण काल**

3. नवपाषाण काल

(1) पाषाण काल :- (stone age) :-

- मध्यप्रदेश में नर्मदा घाटी, चंबल घाटी, बेतवा घाटी, सोनार घाटी, भीमबेटका की गुफाएं आदि प्रमुख पाषाण कालीन स्थल है।
- इस काल के औजार बिना बेंट अथवा लकड़ी के बेंट और हस्तकुठार के अतिरिक्त खुरचनी, युष्टिकुठार, तथा क्रोड मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थलों पर पाए गए हैं।
- भीमबेटका की गुफाएं मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है। ये गुफाएं आदि मानव द्वारा निर्मित शैलाश्रयी व शैलचित्राे प्रवास के लिए प्रसिद्ध है।
- भीमबेटका में लगभग 760 गुफाओं में 500 गुफाएँ चित्रों द्वारा सुसज्जित है।
- इस स्थल को मानव विकास का प्रारंभिक स्थान माना जाता है।
- यूनेस्को द्वारा वर्ष 2003 में भीमबेटका को विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया गया।

(2) मध्यपाषाण काल (Megalithic age)

मध्य पाषाण काल की सभ्यता नर्मदा, चंबल बेतवा एवं उनकी सहायक नदियों की घाटियों में विकसित हुई थी।

- इस काल में जैस्पर, चर्ट, क्वार्टज इत्यादि उच्च कोटि के पत्थरों से बने औजारों में खरचुनियाँ, नोंक व बेधनी प्रमुख थे
- इस काल में औजारों का आकार छोटा होना प्रारंभ हुआ।
- मध्य प्रदेश में इस काल की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल आदमगढ़ (होशंगाबाद) है।

(3) नवपाषाण काल (Neolithic Age):

- मध्य प्रदेश के सागर, जबलपुर, दमोह, होशंगाबाद तथा छतरपुर जिलों में नव पाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए।
- इन औजारों में सेल्ट, कुल्हाड़ी असूला इत्यादि प्रमुख रूप से शामिल है।
- इस काल में कृषि पशुपालन गृह निर्माण एवं अग्नि प्रयोग जैसे क्रांतिकारी कार्यों को अपनाया गया था।

आद्य ऐतिहासिक / ताम्र पाषाण काल :-

- ताम्रपाषाण काल वह काल है जब इंसानो ने पत्थर के साथ-साथ में का इस्तेमाल करना शुरू किया और औजारों में तथा बर्तनों में एक नया आकार एवं मजबूती दी।
- ताम्र पाषाण काल की सभ्यता मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थी जो नर्मदा घाटी क्षेत्र में विकसित हुआ।
- नवदाटोली, कायथा (उज्जैन) नागदा बरखेड़ा (भोपाल) एंरण इत्यादि क्षेत्र इस इलाके के प्रमुख केंद्र थे।
- मध्यप्रदेश के बालाघाट तथा जबलपुर जिलों के कुछ भागों में ताम्रकालीन औजार मिले हैं।

ऐतिहासिक या प्राचीन काल :-

वैदिक युग :- इस काल का इतिहास 1500-600 ईसवी पूर्व के आस-पास शुरू होता है।

- आर्य उत्तर वैदिक (1000-600 ई. पू०) के समय में ही विंध्यांचल को पार कर मध्यप्रदेश में आये थे।
- ऐतरेय ब्राह्मण में जिस निषाद जाति का उल्लेख है, वह मध्य प्रदेश के जंगलों में निवास करती थी।

महापाषाण युग :-

- 1700-1000 ई. पू. की समय अवधि में मध्यप्रदेश में दक्षिण की महापाषाण संस्कृति का प्रभाव भी देखा जाता है।
- दक्षिण भारत के कुछ स्थलों से प्राप्त विशाल पाषाण समाधियों को महापाषाण स्मारक (मंगालिथ) कहा जाता है।
- सिवनी व रीवा जिले से ये स्मारक मिले है।

लौह युगीन संस्कृत :-

- लौह युग के धूसर चित्रित मृद्भांड मध्यप्रदेश के श्योपुर, ग्वालियर, मुरैना एवं भिंड से प्राप्त हुए है।

महाकाव्य काल :-

- रामायण काल में प्राचीन मध्यप्रदेश के अंतर्गत महाकांतर एवं दंडकारण्य (वर्तमान में छत्तीसगढ़ में) के घने वन क्षेत्र थे।
- जनश्रुतियो के अनुसार राम ने वनवास का अधिकांश समय दंडकारण्य (वर्तमान का छत्तीसगढ़ में) बिताया था।
- रामायण काल में विंध्य, सतपुड़ा के अतिरिक्त यमुना के काठे का दक्षिण भू-भाग और गुर्जर प्रदेश के कई क्षेत्र इसके गहरे में थे।
- महाभारत युद्ध में मध्य प्रदेश के कई राज्यों ने भाग लिया था। वत्स, चेदि, कारुष तथा दर्शाण आदि ने

- रानी अवंती बाई को रामगढ़ की झांसी की रानी के नाम से भी जाना जाता है।
- तात्या टोपे की सिंधिया के समस्त मानसिंह ने धोखे से पकड़वा दिया जिसके पश्चात शिवपुरी में फांसी की सजा दी गई।

1857 ईसवी की क्रांति के प्रमुख विद्रोही –

विद्रोही	संबंधित स्थल
शेख रमजान	सागर
टेटया भील	खरगोन
शंकरशाह	गढ़ा मंडला
राजा ठाकुर प्रसाद	रायपुर
शहादत खान	महू (इंदौर)
रानी लक्ष्मीबाई	झांसी ग्वालियर
तात्या टोपे	कानपुर, झांसी,ग्वालियर
भीमा नायक	मंडलेश्वर (उज्जैन)
रानी अवंतीबाई	रामगढ़ झलकारीबाई
झांसी (लक्ष्मीबाई की	अंगररक्षिका

अध्याय - 5

स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान

मध्यप्रदेश में हुए प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलन –

जबलपुर झंडा सत्याग्रह :-

- जबलपुर में कांग्रेस ने अजमल तथा अन्य कांग्रेसियों के सम्मान में झंडा फहराने की रणनीति बनाई, जिसका अंग्रेज पुलिस कमिश्नर ने अपमान किया। अपमान के विरोध में पंडित सुंदरलाल, सुभद्रा कुमारी चौहान, लक्ष्मण सिंह चौहान आदि ने जुलूस निकाला।
- राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर पंडित सुंदरलाल को 6 माह के कारावास की सजा सुनाई गई। 13 अप्रैल 1923 को नागपुर में शुरू हुए सत्याग्रह का आयोजन हुआ था।
- सरोजिनी नायडू तथा मौलाना आजाद की जबलपुर में उपस्थिति के दौरान कंछोड़ी लाल, वंशालाल एवं काशीप्रसाद ने टाउनहाल पर फिर से तिरंगा लहरा दिया था।

असहयोग आंदोलन –

- मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन 1920-21 में असहयोग आंदोलन तथा खिलाजत आंदोलन के साथ-साथ प्रारंभ हुआ।
- असहयोग आंदोलन में मध्य प्रदेश की जनता ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।
- प्रभाकर डुंडीराज ने मध्यप्रदेश में असहयोग आंदोलन का नेतृत्व किया था।
- असहयोग आंदोलन के दौरान वर्ष 1922 में भोपाल रियासत की सीहोर कोतवाली के सामने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई।

नमक सत्याग्रह –

- जबलपुर में सेठ गोविंद दास तथा पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्रा के नेतृत्व में 6 अप्रैल 1930 में नमक सत्याग्रह की शुरुआत की गई।
- सिवनी जिले के दुर्गा शंकर मेहता ने गांधी चौक पर नमक बनाकर सत्याग्रह की शुरुआत की।

जंगल सत्याग्रह –

- मध्यप्रदेश महाकौशल क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले बेतूल के घोड़ा-डोंगरी में 1930 में जंगल सत्याग्रह

भी स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्य घटना थ।

- वर्ष 1930, में सिवनी, डरिया तथा घोड़ाडोंगरी (बेतूल) के आदिवासियों ने जंगल सत्याग्रह किया।
- घोड़ाडोंगरी में गंजनसिंह कोरकू एवं बंजारी सिंह कोरकू के नेतृत्व में यह सत्याग्रह हुआ।

चरण पादुका नरसंहार -

- वर्ष 1931 में छतरपुर क्षेत्र में चरण पादुका ग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों की शांतिपूर्ण बैठक पर पुलिस ने अंधाधुंध गोलियां चलाई जिसमें छः सेनानी शहीद हो गए थे।
- इसे मध्य प्रदेश का जालियांवाला बाग हत्याकांड के नाम से भी जाना जाता है यहां गोली चलाने का आदेश कर्नल फिशर ने दिया था।

स्वतंत्रता के बाद मध्य प्रदेश -

- 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता के बाद सभी रियासतों को भारतीय संघ में मिला दिया गया परंतु वर्ष 1948-49 के राजनीतिक आंदोलन के बाद भोपाल के नवाब ने भोपाल रियासत को भारतीय संघ में सम्मिलित करने की घोषणा की।
- 1 जून 1949 को भारतीय संघ में शामिल किया गया।
- भोपाल के नवाब हमीदुल्ला खां (मेंबर ऑफ प्रिंसेप के दो बार अध्यक्ष बनाए गए।

मध्य प्रदेश का गठन -

- 15 अगस्त 1947 को देश के स्वतंत्र होते ही भारत के हृदय स्थल में एक नया राज्य आकार लेता है जिसे भूतपूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मध्य प्रदेश कहा था।
- सन 1948 तक प्रशासनिक दृष्टि से इस 4 कमिश्नरी एवं 19 जिले थे। लेकिन बाद में नए जिलों के निर्माण के बाद कुछ जिलों की संख्या 22 एवं तहसीलों की संख्या 111 हो गई थी।
- तत्कालीन भारत के 600 रियासतों में नवीन राज्यों का एकीकरण किया गया तब मध्यप्रदेश में सी.पी एंड बराबर के क्षेत्र में महाकौशल एवं छत्तीसगढ़ की रियासतों को मिलाकर नवीन राज्य मध्य प्रदेश का गठन किया गया, जिसकी राजधानी नागपुर रखी गई थी।
- 1950 में इस प्रदेश का नामकरण मध्यप्रदेश किया गया तथा राज्यों के राष्ट्रीय वर्गीकरण में मध्यप्रदेश को पार्ट - ए में शामिल किया गया।
- 1947 से पूर्व वर्तमान मध्य प्रदेश का भौगोलिक भाग रियासती एवं ब्रिटिश शासन के अधीन प्रशासित भाग था। आजादी के बाद मध्य प्रदेश तीन भागों में बांटा हुआ था -

पार्ट - A - ब्रिटिश भारत के सभी प्रांत
पार्ट - B देशी रियासत के सम्मेलन से बने प्रांत
पार्ट - C - केंद्रीय सरकार द्वारा शासित प्रांत

- तत्कालीन मध्य प्रदेश एवं विंध्य प्रदेश पार्ट A प्रांत थे। मध्य भार पार्ट B का प्रांत एवं भोपाल पार्ट C का प्रांत था। जनवरी 1950 को विंध्य प्रांत की पार्ट B का दर्जा दिया गया।

मध्यप्रदेश की रियासतें -

- मध्य भारत में निम्नलिखित रियासतों के सम्मेलन से बना था इसकी राजधानी ग्वालियर थी।
- 1. अलीराजपुर 2. बड़वानी 3. देवास (सीनियर) 4. धार 5. ग्वालियर 6. देवास(जूनियर) 7. इंदौर 8. रतलाम 9. सीतामक 10. काठीवाड़ा 11. मथबार 12. मुहम्मद गढ़ 13. थमिया स्टेटस 14. जामिनिया 15. जावरा 16. सैलोना 17. जोबट 18. कुरवाई 19. पिपलोदा 20. पथरी 21. नीमखेड़ा 22. राजगढ़
- 1948 में मध्य भारत की 22, भोपाल की 5, बुंदेलखंड एवं बधेलखंड की 35 एवं महाकौशल की 15 रियासतों को मिलाकर मध्यप्रदेश बनाया गया था।

मध्यप्रदेश का पुनर्गठन -

- 1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन आयोग की अनुशंसा पर नवीन मध्य प्रदेश का गठन किया गया था।
- 1 नवंबर 1956 को पुनर्गठन के दौरान महाकौशल क्षेत्र के 17 जिले, भोपाल राज्य के 2 जिले, मध्य भारत के मंदसौर जिले के सुनेल क्षेत्र को छोड़कर 16 जिले, मध्य प्रदेश के 8 जिले तथा राजस्थान के कोटा जिले की सिरोंज तहसील को छोड़कर मध्यप्रदेश बना दिया गया था।
- 1 नवंबर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य का गठन करके भोपाल की राजधानी बनाया गया। दोस्त मोहम्मद को वर्तमान भारत का संस्थापक माना जाता है।
- 1 नवंबर 2000 में मध्य प्रदेश का विभाजन कर नए राज्य छत्तीसगढ़ की स्थापना की गई थी।

- देश ही नहीं एशिया का भी प्रथम लेजर अनुसंधान केन्द्र मध्यप्रदेश के इंदौर में स्थापित है।
- मध्यप्रदेश हिन्दी भाषा में गजेटियर प्रकाशित करने वाला देश का प्रथम राज्य है।
- मानवाधिकार आयोग गठित करने वाला मध्यप्रदेश देश का प्रथम राज्य है।
- मध्यप्रदेश जिला स्तरीय मानव विकास रिपोर्ट तैयार करने वाला देश का पहला राज्य है।
- मध्यप्रदेश में देश का पहला कार्गो हवाई अड्डा स्थापित किया जा रहा है।
- मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में देश का पहला सिंकोट्रोन विकिरण स्रोत इंडस-I प्रारंभ किया गया है।
- मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में देश का पहला नेशनल सैलिंग स्कूल- प्रारंभ किया गया है।
- देवास पुलिस अधीक्षक कार्यालय देश का पहला ऐसा S.P. कार्यालय है, जिसे I.S.O. प्रमाण-पत्र दिया गया है।
- मध्यप्रदेश के बैतूल जिले का कसई गाँव गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोत बायोमास संयंत्र द्वारा उत्पादित बिजली से प्रकाशित होने वाला देश का पहला गाँव है।
- भारत का पहला रामायण कला संग्रहालय मध्यप्रदेश के ओरछा में स्थापित किया गया है। साथ ही ओरछा में देश का पहला 'रामायण म्यूजियम भी स्थापित है।
- सरकारी खरीद में आरक्षण लागू करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है।
- मध्यप्रदेश के जबलपुर में स्थापित विद्युत मण्डल देश का पहला विद्युत मण्डल है।
- भोपाल एक्सप्रेस (भोपाल से दिल्ली) देश की पहली ट्रेन है, जिसे 2003 में I.S.O:9001 प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया है।
- देश का पहला पुरातत्व पार्क मध्यप्रदेश के दमोह जिले के संग्रामपुर में बनाया जा रहा है।
- ग्राम सभा की शुरुआत करने वाला देश का पहला राज्य मध्यप्रदेश है।
- देश का प्रथम सौर चलित टेलीफोन एक्सचेंज प्रदेश के शिवपुरी जिले के अयोलपाटा में स्थापित किया जा रहा है।
- BHEL द्वारा भोपाल में संचालित 'जवाहरलाल नेहरू स्कूल I.S.O:9001-2000 प्रमाण-पत्र पाने वाला देश का पहला स्कूल है।
- मध्यप्रदेश, देश का पहला राज्य है, जिसने बेरोजगारी भत्ता देने की व्यवस्था की है।
- मध्यप्रदेश में वर्ष 2006 में देश की पहली साइबर ट्रेजरीका प्रारंभ हुआ।
- अनुसूचित जनजाति का जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश का देश में प्रथम स्थान है।
- वर्ष 1995 में देश का पहला राष्ट्रीय युवा महोत्सव प्रदेश की राजधानी भोपाल में मनाया गया।
- मध्यप्रदेश देश का प्रथम राज्य है, जिसने प्रत्येक जिले में उद्योग केन्द्र स्थापित किये हैं।
- प्रदेश के जबलपुर जिले ने देश का पहला ऐसा जिला बनने का गौरव हासिल किया है, जहाँ 'महत्वाकांक्षा समाधान एक दिन योजना लागू की गई।
- मध्यप्रदेश देश का प्रथम राज्य है, जिसने सभी गाँवों को ग्राम संपर्क नामक वेबसाइट से जोड़ने में सफलता प्राप्त की है।
- देश का एकमात्र आदिवासी शोध संचार केन्द्रमध्यप्रदेश के झाबुआ में स्थापित है।
- मध्यप्रदेश के जबलपुर में देश का पहला विकलांग पुनर्वास केन्द्र स्थापित किया गया है।
- देश का पहला 'रत्न परिष्कृत केन्द्र जबलपुर में स्थापित किया गया है।
- देश ही नहीं एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन संयंत्र उज्जैन में स्थापित है।
- देश में सर्वाधिक पवन चक्कियाँ मध्यप्रदेश में हैं।
- मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल स्थापित करने वाला देश का पहला राज्य है।
- मध्यप्रदेश में देश के सर्वाधिक राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्य हैं।
- प्रदेश में देश की सर्वाधिक नदियाँ प्रवाहित होती हैं।
- भारत में सती-प्रथा के प्रथम साक्ष्य मध्यप्रदेश के सागर जिले के एरण अभिलेख से प्राप्त हुए हैं।
- देश का पहला शिव संग्रहालय राजधानी भोपाल के निकट स्थित भोजपुर में प्रस्तावित है।
- देश का पहला सामान्य वर्ग निर्धन कल्याण आयोग मध्यप्रदेश में 2008 में गठित किया गया है।

मध्यप्रदेश में सबसे बड़ा/सबसे छोटा / सबसे / सबसे नीचा/सबसे अधिक / सबसे कम

- सबसे कम जनसंख्या वृद्धि करने वाला जिला अनूपपुर है।

- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा जिला निवाड़ी है। (11 अक्टूबर, 2018 के बाद)
- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी तहसील इंदौर है।
- सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला जिला इन्दौर है (जनगणना 2011)
- सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाला जिला रीवा है। (जनगणना 2011)
- प्रदेश का सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला बालाघाट है (1000 :1021)
- सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला भिण्ड है। (1000:837)
- मध्यप्रदेश में सर्वाधिक लम्बे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले व्यक्ति श्री शिवराजसिंह चौहान है।
- मध्यप्रदेश में सर्वाधिक केला बुरहानपुर जिले में उत्पादित होता है।
- एशिया का सबसे बड़ा पनीर निर्माण संयंत्र मध्यप्रदेश के खजुराहो में स्थापित किया गया है।
- मध्यप्रदेश का सबसे ऊँचा स्थान धूपगढ़ पहाड़ी (पचमढ़ी) है।
- मध्यप्रदेश का सबसे नीचा स्थान नर्मदा सोन घाटी है।
- सबसे लंबी नदी नर्मदा (1312 किमी.) है।
- प्रदेश का सबसे लंबापुल सिंध नदी पुल है।
- मध्यप्रदेश में सर्वाधिक वर्षा वाला स्थल पचमढ़ी है।
- सबसे कम वर्षा वाला क्षेत्र भिण्ड है।
- सबसे बड़ा वनवृत्त खण्डवा है।
- सबसे छोटा वनवृत्त होशंगाबाद है।
- प्रदेश का सर्वाधिक साक्षर जिला जबलपुर है।
- प्रदेश का सबसे कम साक्षर जिला अलीराजपुर है।
- सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला इंदौर है।
- सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला भोपाल है।
- सबसे कम पुरुष व महिला साक्षरता वाला जिला अलीराजपुर है।
- सर्वाधिक वन वृक्ष सागौन के हैं।
- मध्यप्रदेश में सर्वाधिक पाया जाने वाला वन्य पशु चीतल है।
- सबसे बड़ी जनजाति भील है।
- नवीन परिवर्तनों के बाद प्रदेश से गुजरने वाला सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग NH-46 है।
- प्रदेश का सबसे गर्मस्थान गंजबासौदा है।
- प्रदेश का सबसे ठंडा स्थान शिवपुरी है।
- सबसे बड़ा भौतिक विभाग मालवा का पठार है।
- सबसे बड़ा कोयला भण्डार सोहागपुर क्षेत्र में है।
- प्रदेश का सबसे बड़ा शिवलिंग भोजपुर मंदिर का है।
- प्रदेश का मालवा क्षेत्र सर्वाधिक गेहूँ उत्पादक क्षेत्र है।
- सर्वाधिक प्रसार वाला समाचार पत्र दैनिक भास्कर है।
- सर्वाधिक सिनेमा घर वाला शहर इंदौर है।
- सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान कान्हा - किसली है।
- सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान फासिल (डिण्डोरी) है।
- क्षेत्रफल में सबसे छोटा जिला निवाड़ी है। (1 अक्टूबर, 2018 के बाद)
- क्षेत्रफल में सबसे बड़ा संभाग जबलपुर है।
- क्षेत्रफल में सबसे छोटा संभाग शहडोल है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रदेश का सबसे बड़ा जिला छिंदवाड़ा है।
- जनसंख्या की दृष्टि से प्रदेश का सबसे बड़ा जिला इंदौर है।
- चंबल संभाग प्रदेश का सबसे कम लिंगानुपात वाला संभाग है।
- जबलपुर संभाग प्रदेश का सबसे अधिक लिंगानुपात वाला संभाग है।
- प्रदेश का सबसे बड़ा नगर इंदौर है।
- सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि करने वाला जिला इंदौर है।
- प्रदेश की सबसे बड़ी मस्जिद ताजुल मस्जिद भोपाल में है।
- सबसे बड़ा रेलवे जंक्शन इटारसी जंक्शन है।
- प्रदेश की सबसे बड़ी गणपति प्रतिमा इंदौर में है, जो बड़ा गणपति के नाम से प्रसिद्ध है।
- सबसे मोटी कोयला परत सिंगरौली में है।
- देश का सबसे बड़ा मानव निर्मित जलाशय इंदिरा सागरजलाशय है।
- बालाघाट के मलाजखण्ड में एशिया की सबसे बड़ी भूमिगत ताम्र अयस्क खदान का भूमि पूजन 12 अप्रैल, 2015 को किया गया।
- प्रदेश का सर्वाधिक सघन आबादी वाला जिला भोपाल (855 प्रति वर्ग किमी. 2011 के अनुसार) है।
- सबसे अधिक विरल आबादी वाला जिला डिण्डोरी 94 प्रति वर्ग किमी. 2011 के अनुसार है।
- सर्वाधिक सघन आबादी वाला संभाग भोपाल है।

- सर्वाधिक विरल आबादी वाला संभाग शहडोल है।

प्रसिद्ध नगर व स्थलों के नाम	
स्थान	**उपनाम**
भेड़ाघाट	संगमरमर की चट्टानें
धार	भोज नगरी
उज्जैन	मंदिरों, मूर्तियों का नगर
उज्जैन	महाकाल की नगरी
खजुराहो	शिल्पकला का तीर्थ
भीम बेठिका	शैल चित्रकला
साँची	बौद्ध जगत की पवित्र नगरी
इंदौर	मिनी मुम्बई
सिवनी	मध्यप्रदेश का लखनऊ
बालाघाट	मैंगनीज नगरी
पचमढ़ी	पर्यटकों का स्वर्ग
खण्डवा - खरगोन	सुनहरे जिले
बेतवा	मध्यप्रदेश की गंगा
क्षिप्रा	मालवा की गंगा
रीवा	सफेद शेर की भूमि
इंदौर	कपड़ों का शहर
कटनी	चूना नगरी
माण्डू	आनंद नगरी (सिटी ऑफ जॉय)
मालवा	गेहूँ का भण्डार
ग्वालियर	तानसेन की नगरी
मैहर	संगीत नगरी
भोपाल	झीलों की नगरी
पीथमपुर	भारत का डेट्राइट
उज्जैन	मंगल ग्रह की जन्मभूमि
उज्जैन	पवित्र नगरी
इंदौर	अहिल्या नगरी
ग्वालियर	पूर्व का जिब्राल्टर
पन्ना	डायमण्ड सिटी
जबलपुर	संगमरमर नगरी (मार्बल सिटी)
पीथमपुर	भारत का डेट्राइट
माण्डू	महलों की नगरी
भोजपुर	मध्यप्रदेश का सोमनाथ
सागर	मध्यप्रदेश का स्विट्जरलैण्ड
पेंच	मध्यप्रदेश का मोगलीलैंड
भारत भवन	प्रदेश का सांस्कृतिक केन्द्र

महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के उपनाम / उपाधियों	
व्यक्ति	**उपनाम / उपाधियाँ**
डॉ. लीला जोशी	मध्यप्रदेश . की मदर टेरेशा
घाघ	कृषि वैज्ञानिक
दिग्विजय सिंह	दिग्गी राजा

सैयद मुश्ताक अली	कैप्टन
सुमित्रा महाजन	ताई
अलाउद्दीन खाँ	सरोद सम्राट
शंकर लक्ष्मण	गोली
आचार्य केशवदास	कठिन काव्य का प्रेत
संत सिंगाजी	मालवा का कबीर
स्व. लक्ष्मणसिंह गौड	दादा
अमृतलाल बेगड	नर्मदा पुत्र
महेश शर्मा	झाबुआ का गाँधी
छत्रसाल	बुन्देलखण्ड का शिवाजी
तानसेन	संगीत सम्राट
कालिदास	भारत का शेक्सपियर
चन्द्रशेखर आजाद	शहीद
लता मंगेशकर	स्वर साम्राज्ञी
पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र	आधुनिक चाणक्य
माखनलाल चतुर्वेदी	एक भारतीय आत्मा
मनु	रानी लक्ष्मीबाई
रानी अवंतीबाई	रामगढ़ की रानी
कुंजीलाल दुबे	मध्यप्रदेश के विधि पुरुष
विजयाराजे सिंधिया	राजमाता
अहिल्याबाई होल्कर	लोकमाता/देवी
कुशाभाऊ ठाकरे	भाजपा के पितृ पुरुष
अशोक कुमार	दादा मुनि
राजेन्द्र जैन	भगवान रजनीश ओशो
श्रीनिवास तिवारी	विंध्य का शेर

नगरों / स्थलों के प्रसिद्धि के कारण	
नगरी/स्थान का नाम	**प्रसिद्धि पाने का कारण**
1. भोपाल	राजधानी क्षेत्र व झीलें
2. इंदौर	उद्योग नगरी/मिनी मुम्बई
3. खजुराहो	कलात्मक मंदिरों के कारण
4. पचमढ़ी	एकमात्र हिल स्टेशन
5. मलाजखण्ड	ताँबे की खदानें
6. पन्ना	हीरे की खदानें
7. साँची	बौद्ध स्तूपों के कारण
8. मंदसौर	अफीम उत्पादन के कारण
9. इटारसी	रेलवे जंक्शन
10. नेपानगर	कागज मिल
11. भीम बेठिका	प्राचीन शैलचित्र
12. रीवा	सफेद शेरों के कारण
13. सिंगरौली	सबसे मोटी कोयला खदान
14. भेड़ाघाट	संगमरमर की चट्टानें
15. अमलाई	पेपर मिल
16. खण्डवा	सिंगाजी का मेला

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/dy0fu7

Online order - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083